सांध्य दैनिक

4PM

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 12 ● अंक 195 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, शनिवार 22 अगस्त, 2026

मूल्य ₹ 3/-

उस तरह मत चलिए जिस तरह डर आपको चलाये। उस तरह चलिए जिस तरह प्रेम आपको चलाये। उस तरह चलिए जिस तरह ख़ुशी आपको चलाये।
-ओशो

रॉबिन्सन और टंग के आगे पाकिस्तानियों... 7 | बिहार कांग्रेस में अब भी जारी... 3 | एकरंगी लोग पीडीए के बहुरंग... 2

करोड़ों का घोटाला, ईडी का जाल, बड़ा सवाल कहा है टिबरेवाल

» सब पकड़े गए, मगर हरि शंकर टिबरेवाल कहां है?

» महादेव से स्काई एक्सचेंज तक आखिर कितना बड़ा है यह बेटिंग नेटवर्क?

» लंदन के मेफेयर में चर्चित एडवोकेट विजय अग्रवाल की गिरफ्तारी से सुलग उठे एक साथ कई सवाल?

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। महादेव ऑनलाइन बेटिंग मामले की जांच जैसे जैसे आगे बढ़ रही है वैसे-वैसे नई परतें खुल रही हैं। कहीं किसी सहयोगी तक जांच पहुंच रही है कहीं संपत्तियों पर कार्रवाई हो रही है कहीं पैसों के रास्तों की पड़ताल हो रही है तो कहीं विदेशी कंपनियों और नेटवर्क की कड़ियां जांच एजेंसियों की फाइलों में दर्ज हो रही हैं। लेकिन इस पूरी कहानी के बीच एक नाम ऐसा है जिसे लेकर सवाल कम होने के बजाय लगातार बड़े होते जा रहे हैं और वह नाम है हरि शंकर टिबरेवाल का, लोग पूछ रहे हैं कि आखिर टिबरेवाल ईडी की आंखों में धूल झोक कर कहां छुपा बैठा है।

यही वह सवाल है जिसने इस पूरे मामले को और रहस्यमय बना दिया है। क्योंकि जब जांच किसी नेटवर्क के सहयोगियों तक पहुंच सकती है जब संपत्तियों की पहचान हो सकती है जब गिरफ्तारियां हो सकती हैं जब विदेशी कंपनियों और पैसों के कथित रास्तों की पड़ताल हो सकती है तो फिर उस नाम तक कार्रवाई क्यों नहीं पहुंची जो जांच के दस्तावेजों में प्रमुखता से सामने आता रहा? क्या टिबरेवाल जांच एजेंसियों की पहुंच से बाहर है? इन सवालों के जवाब साफ नहीं हैं और इसी खाली जगह में अटकलें जन्म ले रही हैं। लोग पूछ रहे हैं कि आखिर ऐसा क्या है कि महादेव मामले में एक के बाद एक कार्रवाई की खबरें आती हैं लेकिन टिबरेवाल को लेकर कोई स्पष्ट तस्वीर सामने नहीं आती। सोशल और राजनीतिक हलकों में यह सवाल भी उठ रहा है कि कहीं मामला किसी स्तर पर ले-देकर सेटल तो नहीं हो गया? क्योकि लंदन के मेफेयर में भारत के चर्चित आपराधिक मामलों के वकील विजय अग्रवाल की गिरफ्तारी ने इस पुरानी फाइल पर फिर से रोशनी डाल दी है। विजय अग्रवाल के खिलाफ ब्रिटेन में चल रहा मामला अलग है और उसका महादेव जांच या टिबरेवाल से कोई सार्वजनिक रूप से स्थापित संबंध सामने नहीं आया है। लेकिन मेफेयर का नाम सामने आते ही टिबरेवाल को लेकर वह पुराने दावे फिर चर्चा में आ गए जिनमें उसके लंदन और मेफेयर से जुड़े होने की बात कही गई थी। बस यहीं से आग फिर भड़क गई है। क्या टिबरेवाल वास्तव में लंदन में है? क्या जांच एजेंसियों को उसकी लोकेशन मालूम है? क्या उसे भारत वापस लाने के लिए कोई प्रक्रिया चल रही है? और अगर नहीं तो क्यों नहीं?

संबंधित खबरें पेज 8 पर

पत्रकारिता का काम पूछना है

विजय अग्रवाल लंदन में किस काम के लिए गये थे? हरि शंकर टिबरेवाल आज कहां है और उसके खिलाफ ईडी की जांच किस स्थिति में है? और महादेव ऑनलाइन बुक से जुड़ी उस पूरी जांच में आखिर कितनी परतें खुलनी अभी बाकी हैं? कहानी लंदन से शुरू जरूर होती है। लेकिन सवाल भारत की जांच एजेंसियों के दरवाजे तक अपने आप पहुंच रहा है। लंदन के मेफेयर विजय अग्रवाल की गिरफ्तारी अपने आप में एक गंभीर आपराधिक मामला है। भारत के चर्चित आर्थिक अपराध और हाई प्रोफाइल मामलों में वकील के तौर पर पहचान रखने वाले विजय अग्रवाल को ब्रिटिश पुलिस ने गिरफ्तार किया है।

जांच एजेंसियों को क्या टिबरेवाल की लोकेशन मालूम है?

लंदन का यह इलाका इस कहानी में सिर्फ एक भौगोलिक नाम नहीं रह जाता। क्योंकि उपलब्ध दस्तावेजों में हरि शंकर टिबरेवाल के लंदन और मेफेयर से जुड़े होने के दावे भी दर्ज हैं। इन दावों की स्वतंत्र ब्रिटिश आधिकारिक पुष्टि उपलब्ध सामग्री में नहीं है इसलिए इन्हें स्थापित तथ्य नहीं कहा जा सकता। लेकिन इतना जरूर है कि एक तरफ विजय अग्रवाल मेफेयर में मौजूद हैं और वहीं उनकी गिरफ्तारी की खबर आती है जबकि दूसरी तरफ टिबरेवाल के कथित रूप से उसी इलाके में होने के दावे सामने आते हैं। इस संयोग को देखते हुए सवाल उठ रहे हैं कि क्या विजय अग्रवाल और हरि शंकर टिबरेवाल के बीच कभी कोई पेशेवर या कानूनी संबंध रहा है? क्या विजय अग्रवाल ने कभी टिबरेवाल का प्रतिनिधित्व किया? क्या टिबरेवाल के परिवार सहयोगियों या उससे जुड़ी किसी कंपनी को कानूनी सेवाएं दी गईं? और क्या विजय अग्रवाल की लंदन यात्रा का किसी ऐसे पेशेवर काम से कोई संबंध था? यहां यह भी समझना जरूरी है कि अगर कोई वकील किसी आरोपी या जांच के दायरे में आए व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है तो अपने आप में वह कोई अपराध नहीं है। कानून हर व्यक्ति को कानूनी प्रतिनिधित्व का अधिकार देता है। सवाल केवल संबंध की मौजूदगी और उसके स्वरूप का है।

कहां है ईडी के दस्तावेजों वाला टिबरेवाल

हरि शंकर टिबरेवाल यह वही नाम है जो ईडी के दस्तावेजों में स्काई एक्सचेंज और उससे जुड़ी जांच के संदर्भ में सामने आया है। दस्तावेजों में उसके आर्थिक नेटवर्क सहयोगियों विदेशी कंपनियों दुबई कनेक्शन और भारतीय शेयर बाजार में निवेश के रास्तों का जिक्र है। उसके आसपास के लोगों पर कार्रवाई हुई है गिरफ्तारियां भी हुई और संपत्तियों की जांच तथा जब्ती की कार्रवाई भी की गयी है। लेकिन सवाल यह है कि जिस जांच की परतें उसके पूरे नेटवर्क तक पहुंच रही है उस जांच में खुद हरि शंकर टिबरेवाल की मौजूदा स्थिति क्या है? क्या वह भारत में है? क्या वह दुबई में है? या फिर उन दावों में सच्चाई है जिनमें उसके लंदन और मेफेयर से जुड़े होने की बात कही गई? यहीं से लंदन की कहानी और भारतीय जांच वाली कहानी एक ही फ्रेम में दिखाई देने लगती है। एक तरफ मेफेयर में विजय अग्रवाल की गिरफ्तारी है। दूसरी तरफ उसी मेफेयर को लेकर टिबरेवाल की मौजूदगी से जुड़े दावे हैं। क्या दोनों के बीच कोई पेशेवर संबंध है? इसका हमारे पास कोई सार्वजनिक प्रमाण नहीं है। इसलिए इसे तथ्य की तरह पेश करना गलत होगा। लेकिन सवाल पूछा जा सकता है कि क्या विजय ने कभी टिबरेवाल उसके परिवार उसके सहयोगियों या उससे संबंधित किसी कंपनी को कानूनी सेवाएं दीं? अगर नहीं दीं तो साफ जवाब आना चाहिए। अगर दीं तो यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि संबंध किस हैसियत से था।

एकरंगी लोग पीडीए के बहुरंग को क्या जानें : अखिलेश यादव

» सपा प्रमुख बोले- भाजपा के नेता पीडीए की उपेक्षा करते हैं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख व सीएम योगी में एक-दूसरे पर प्रहार करना जारी है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के पीडीए में पी से पाकिस्तान वाले बयान पर तीखी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने एक्स के माध्यम से कहा है कि एकरंगी क्या जानें, पीडीए के बहुरंग।

उन्होंने भाजपा नेताओं पर पीडीए की उपेक्षा किए जाने का आरोप भी लगाया है। इससे पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सपा पर हमला बोला था। उन्होंने कहा कि सपा गिरगिट की तरह रंग बदलती है और पीडीए का पी एक दिन पाकिस्तान कर देगी। योगी इकाना क्रिकेट स्टेडियम में पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह की पांचवीं पुण्यतिथि पर हिंदू गौरव दिवस कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने सपा को गिद्ध बताते हुए कहा कि इनके बयानों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि सपा का पी कभी पिछड़ा था, फिर पंडित हो गया। योगी ने कल्याण सिंह के निधन पर सपा मुखिया द्वारा श्रद्धांजलि न देने को दुर्भाग्यपूर्ण और शर्मनाक बताया। उन्होंने इसे हर उस हिंदू का अपमान कहा, जो कल्याण सिंह को

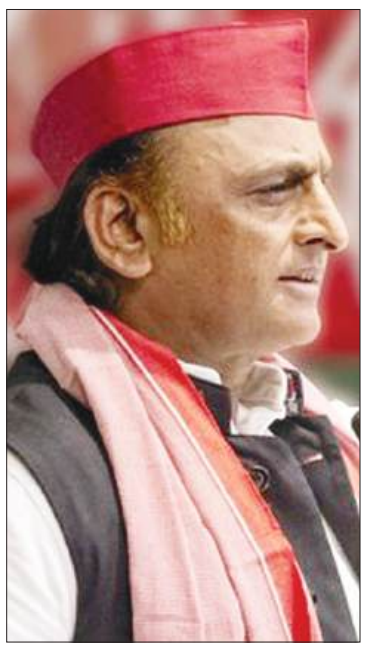

सनातन मूल्यों और हिंदू गौरव के लिए समर्पित मानता है। योगी ने राम जन्मभूमि आंदोलन में कल्याण सिंह की भूमिका का जिक्र किया। कल्याण सिंह दबाव में नहीं आते थे और कहते थे कि वह टूट सकते हैं पर झुक नहीं सकते। उन्होंने सत्ता गंवाई लेकिन रामभक्तों पर गोली नहीं चलने दी। संतों, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद के आंदोलन का उन्होंने खुलकर समर्थन किया। कल्याण सिंह के प्रति श्रद्धावान होना सनातनियों का दायित्व है।

बीजेपी सत्ता का जमकर दुरुपयोग कर रही

सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भाजपा को राजनीतिक दल नहीं बल्कि गैंग करार देते हुए कहा कि भाजपा सत्ता के दुरुपयोग को अपना अधिकार समझती है। भ्रष्टाचार और सरकारी बजट की लूट भाजपा का मुख्य एजेंडा है। पीडीए समाज पर उत्पीड़न का आरोप लगाते हुए कहा कि फर्जी एनकाउंटर हो रहे हैं। समाजवादी पार्टी राज्य मुख्यालय में नेताओं और कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए अखिलेश ने कहा कि भाजपा सरकार ने अयोध्या में प्रभु श्रीराम के मंदिर में हुए चढ़ावा चोरी को गंभीरता से नहीं लिया। सरकार ने चढ़ावा चोरी में शामिल बड़े लोगों को बचाने का काम किया है। समाजवादी पार्टी के ही पास भाजपा के षड्यंत्र को विफल करने की ताकत है।

समाजवादी पार्टी को बदनाम कर कर रही है भाजपा

अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा, समाजवादी पार्टी को बदनाम करने से बाज नहीं आ रही है। मोहम्मद आजम खां के खिलाफ साजिश कर रही है। उन्होंने कहा कि बाढ़ और जल भराव से प्रयागराज के हालात गंभीर हैं। कोई और हो तो प्रयागराज के विकास के नाम पर एक लाख करो डकार जाने के बाद, वहां के हजारों घरों का जलमग्न हाल देखकर शर्मिंदगी से सत्ता ही छोड़ दे। अखिलेश यादव ने कहा कि नाम बदलने से कुछ नहीं होता। सरकार अपना भ्रष्ट काम और नीयत बदले।

जाट समाज से माफी मांगे अखिलेश यादव : मायावती

जयंत पर की गई टिप्पणी पर बसपा प्रमुख ने सपा को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने शनिवार को समाजवादी पार्टी (सपा) प्रमुख अखिलेश यादव पर निशाना साधते हुए कहा कि राष्ट्रीय लोकदल (रालोद) के अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री जयंत चौधरी के बारे में की गई अमर्यादित टिप्पणी के लिए उन्हें पूरे जाट समाज से माफी मांगनी चाहिए।

मायावती ने 'एक्स' पर पोस्ट में कहा कि अखिलेश यादव का यह कहना कि हमने इनको चवन्नी से रुपया बना दिया है पूरी तरह अमर्यादित, अशोभनीय और शर्मनाक है। उन्होंने कहा कि अखिलेश को रालोद और उसके नेता के साथ-साथ पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के परिवार का अपमान करने के लिए पूरे जाट समाज से माफी मांगनी चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि सपा का चाल, चरित्र और चेहरा विरोधी दलों ही नहीं, बल्कि सहयोगी पार्टियों के प्रति भी संकीर्ण और जातिवादी रहा है। इसका राजनीतिक लाभ अक्सर भाजपा को मिला और सेक्युलर ताकतें कमजोर हुईं। मायावती ने कहा कि सपा के इसी रवैये के कारण 1993 में मुलायम सिंह यादव के साथ बना सपा-बसपा गठबंधन टूट गया और दो जून 1995 को कुख्यात लखनऊ स्टेट गेस्ट हाउस कांड हुआ।

उन्होंने कहा कि 2019 में अखिलेश यादव के आश्वासन पर बसपा ने फिर गठबंधन किया, लेकिन चुनावी नतीजे अनुकूल न आने के बाद सपा के अहंकारी और स्वार्थी रवैये के कारण वह भी टूट गया। मायावती ने आरोप लगाया कि सपा गठबंधन में केवल अपना काम निकालना जानती है और काम निकलने के बाद दूसरी पार्टियों के खिलाफ अनाप-शनाप का इस्तेमाल करती है।

सपा के पीडीए फॉर्मूले पर भी सवाल

मायावती ने सपा के पीडीए (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) फॉर्मूले पर भी सवाल उठाते हुए आरोप लगाया कि सपा प्रमुख राजनीतिक स्वार्थ के अनुसार 'पी' का अर्थ कभी पिछड़ा वर्ग तो कभी पंडितों का हित बताते हैं। उन्होंने कहा कि सपा अपनी जाति को छोड़कर अन्य पिछड़े वर्गों, अल्पसंख्यकों और विशेषकर ब्राह्मण समाज की हितैषी नहीं रही। उन्होंने आरोप लगाया कि सपा की सरकारों में दलितों, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों और सवर्ण समाज, खासकर ब्राह्मणों का शोषण हुआ और सकारात्मक कदम नहीं उठाए गए। मायावती ने कहा कि सपा सरकारों में गुंडों, बदमाशों, माफियाओं और अराजक तत्वों का ही भला हुआ तथा महिलाओं की सुरक्षा की स्थिति भी खराब थी। उन्होंने सर्वसमाज के लोगों से आगामी विधानसभा चुनाव में सपा को सत्ता में नहीं आने देने की अपील की।

नकली घी का प्रचलन बाबा रामदेव की वजह फैला : बृजभूषण शरण

पूर्व सांसद बोले- सिंदूर लगाकर और सलवार पहनकर न आएं आंदोलन करने

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गोंडा। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के पूर्व सांसद बृजभूषण शरण सिंह ने योग गुरु बाबा रामदेव पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि मूल रूप से स्वदेशी के नाम पर शुरू किया गया अभियान अब नकली उत्पादों और विदेशी सामानों तक फैल गया है।

सिंह ने रामदेव को विरोध प्रदर्शन करने की चुनौती देते हुए कहा कि अगर योग गुरु आंदोलन शुरू करने का इरादा रखते हैं, तो उन्हें इस बार निर्णायक लड़ाई लड़नी चाहिए और ''एक आदमी की तरह'' ऐसा करना चाहिए। जिला मुख्यालय के एक कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में सिंह ने बाबा रामदेव के आंदोलन के संबंध में एक प्रश्न पर कहा कि रामदेव ने स्वदेशी के मुद्दे को उठाना शुरू किया था, इसलिए, उनका आंदोलन उचित था। हालांकि, उन्होंने तंज कसते हुए कहा

कि रामदेव अब 'विदेशी' अधोवस्त्र भी बनाने लगे हैं। सिंह ने रामदेव के पिछले विरोध प्रदर्शनों को याद करते हुए कहा कि इस बार उनसे कहा जाना चाहिए कि वह सिंदूर लगाकर और सलवार पहनकर न आएं। सिंह ने यह भी दावा किया कि देश में नकली घी के प्रचलन को लेकर अक्सर सवाल उठते रहे हैं और उन्होंने इसके लिए रामदेव को जिम्मेदार ठहराया।

यूपी कांग्रेस ने राहुल के समर्थन में दिया धरना

पैलेट गन चलाने वाले दोषी लोगों के विरूद्ध एफआईआर नेता प्रतिपक्ष की जीत : राय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। दिल्ली में जेन जी छात्रों पर पुलिस द्वारा चलाये गये पैलेट गन के विरोध में दोषी लोगों के विरूद्ध एफआईआर दर्ज कराने के लिए लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पीड़ित छात्र को लेकर दिल्ली के संसद मार्ग थाने पहुंचे, जहां पुलिस द्वारा एफआईआर न दर्ज करने पर राहुल गांधी जी सहित प्रियंका गांधी एवं कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं एवं सैंकड़ों कार्यकर्ताओं द्वारा धरना दिया गया। उन्हीं के समर्थन में राज्य कांग्रेस ने भी राहुल गांधी का साथ देते हुए प्रदर्शन किया। वहीं प्रदेश कांग्रेस के मीडिया चेयरमैन पूर्व मंत्री डा. सीपी राय ने दिल्ली पुलिस द्वारा एफआईआर दर्ज करने पर कहा कि यह राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी की जीत है।

बता दें राहुल गांधी द्वारा धरना दिये जाने की खबर मिलने पर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के उप कांग्रेस प्रभारी राजेन्द्र पाल गौतम , पिछड़ा वर्ग विभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 अनिल जयहिन्द के नेतृत्व में सैंकड़ों नेताओं एवं कार्यकर्ताओं द्वारा प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय स्थित

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा के समक्ष धरना दिया गया। धरने के दौरान यह खबर मिलने पर कि दिल्ली पुलिस द्वारा एफआईआर दर्ज कर ली गयी है इसके उपरान्त कांग्रेसजनों द्वारा धरना समाप्त किया गया। धरने में मुख्य रूप से एआईसीसी सचिव जगदीश चन्द्र जांगी, विधायक वीरेन्द्र चैधरी, विश्वविजय सिंह, मनोज यादव, डा0 उमाशंकर पाण्डेय, प्रियंका गुप्ता, डा. राज कुमार मौर्या, सचिन रावत, राम गणेश प्रजापति हर्षवर्धन श्याम,दिनेश सिंह, आसिफ रिजवी रिंकू, ब्रज मौर्या, बृजेन्द्र कुमार सिंह, तरूण पटेल,राकेश पासवान, जितेन्द्र पटेल, शरद शुक्ला, संजय मौर्य, अभिषेक तिवारी, राहुल सचान, नीतम सचान, आशीष सिंह, सुशीला शर्मा, शीला मिश्रा, अभिषेक पटेल, शहबाज खान, श्री अखिलेश वर्मा, विकास श्रीवास्तव, सहित सैंकड़ों की संख्या में कांग्रेसजन मौजूद रहे।

अखिलेश की वजह से पंचायत चुनाव में हुई देरी : राजभर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। ओमप्रकाश राजभर ने सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव पर तंज कसा। उन्होंने कहा कि अखिलेश यादव का सपना साल 27 में क्या, इस जन्म में भी पूरा नहीं होगा। इसके लिए वह अगले जन्म की तैयारी करें।

वहीं एनडीए में सीटों के बंटवारे पर अखिलेश यादव के एक्स पोस्ट पर कटाक्ष करते हुए कहा कि वह एनडीए के राष्ट्रीय अध्यक्ष बना दिए गए हैं और वह प्रधानमंत्री और गृहमंत्री से मिलकर आए हैं। इसीलिए यह जानकारी दे रहे हैं। इन्ही की

वजह से पंचायत चुनाव में देरी हो रही है। ओमप्रकाश राजभर ने मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए कांग्रेस पार्टी और राहुल गांधी पर भी कटाक्ष किया। कहा कि राहुल गांधी दुनिया के किसी भी देश में जाते हैं तो वहां भारत का अपमान करते हैं। जिस चुनाव आयोग की प्रक्रिया में चुनाव जीते उसी पर फर्जी मतदान करवाने का आरोप लगाते हैं। कर्नाटक में उनकी सरकार है, वहां इस्तीफा दिलवा दें।

सत्ता से पहले सपा को बचाने की सोचिए

मंत्री ओम प्रकाश राजभर ने कहा कि, अखिलेश जी! नमस्ते.सत्ताईस में सत्ता की सोचने से पहले सत्ताईस से पहले सपा कैसे बचाई जाये, ये सोचना शुरू कर दीजिए,क्योंकि आपके लोग खुद आपके पीडीए की पोल खोल रहे हैं. पता है न! आपके पीडीए का पी आपके साथ है नहीं, ना पंडित और ना पिछड़ा. आपके झूठ से जो थोड़ा सा डी आपके साथ आया था, वो भी अब आपके खिलाफ खुल के खड़ा होने लगा है. बचेगा सिर्फ अशफ़ाक़ वाला ए। उन्होंने कहा कि, सहारनपुर सर्किट हाउस में आपके वाले पीडीए की असली वाली पोल बहुत धूम-धड़ाके के साथ खुल के सामने आ गई है? यक़ीन ना हो तो अपने प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल जी से पूछ लीजिएगा, वो वहीं सर्किट हाउस में बैठकर बस मुंह ताकने का काम कर रहे थे। राजभर ने आगे कहा, दलित समाज की जिला पंचायत सदस्य बहन ममता चौधरी ने भरी मीटिंग में आपके नेताओं को बहुत कायदे से सुनाया है। उनके साथ दलित समाज और गैर यादव पिछड़ा समाज के सपा कार्यकर्ताओं ने भी मिलकर आपके पीडीए यानी पीट देगा अहीर, पीट देगा अल्पसंख्यक' (सपाई) की कायदे से पोल खोली है।

बिहार कांग्रेस में अब भी जारी है मंथन और चिंतन

चुनाव में हार के नौ माह बाद कुछ ठोस नहीं दिखा

अब भी हो रही जांच, किसकी जिम्मेदारी

» भाजपा-जदयू व राजद अपने काम में व्यस्त

» तेजस्वी का सम्राट पर प्रहार जारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। बिहार में नई सरकार विवादों के बीच काम कर रही है। वहां की मुख्य विपक्षी पार्टी राजद एनडीए अगुवाई वाली सम्राट चौधरी पर अपना तीखा प्रहार जारी रखे हुए है। जहां भाजपा -जदयू व अन्य सहयोगी दल अपने को अपने को और मजबूत कर रही हैं वहीं राजद नेता बिहार सरकार के खिलाफ मोर्चा संभाले हुए हैं हर मंच से उसके कामों की तीखी आलोचना कर रहे हैं जबकि हासिए पर जा चुकी कांग्रेस अब भी उतनी सक्रिय नहीं है। जितना वा चुनावों से कुछ महीन रहती है। हार के बाद मंथव व चिंतन तो बहुत करती है पर कोई परिणाम नजर नहीं आता है।

बिहार विधानसभा चुनाव 2020 में चुने गए 19 कांग्रेसी विधायकों में से दो ने 2024 में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन का दामन थाम लिया था। इसके बाद 25 का बिहार चुनाव आने वाला था तो कांग्रेस के नंबर वन नेता राहुल गांधी जमीन से लेकर बाइक और यहां तक कि तालाब में भी उतर गए, लेकिन उनकी मेहनत को दरकिनार करते हुए राष्ट्रीय जनता दल ने महागठबंधन के सबसे बड़े राष्ट्रीय दल के लिए 243 में से महज 61 सीटें लड़ने के लिए छोड़ीं। इन 61 सीटों में से छह पर जीत मिली और पांच पर जमानत जब्त हो गई। बाकी पर भी बुरी हार ही हुई। बिहार चुनाव में मिली करारी हार के नौ महीने हो चुके हैं, लेकिन कांग्रेस स्थिर नहीं है। नौ महीने में उसके मंथन के गर्भ से क्या निकलेगा, यह कुछ समय बाद सामने आएगा। फिलहाल यह अहम खबर है कि कुछ दिनों पहले दिल्ली के इंदिरा भवन में कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने बिहार प्रदेश कांग्रेस प्रभारी और प्रदेश अध्यक्ष को ठीकठाक सुनाई है। मजम्मत की है।

राहुल गांधी की मेहनत बर्बाद होने पर की गई समीक्षा

पिछले साल राहुल गांधी ने बिहार में जितनी मेहनत की थी, उतनी उससे पहले कभी नहीं की थी। वह बिहार चुनाव को लेकर सबसे पहले सक्रिय हुए थे। फरवरी से ही चुनावी तैयारी शुरू कर दी थी। राहुल गांधी ने पिछले साल जब बिहार की जमीन पर पांव जमाने उतरे थे, तभी प्रदेश प्रभारी के रूप में दक्षिण से कृष्णा अल्लावरु को लाया था और फिर राज्य की कमान तत्कालीन विधायक राजेश राम को दी गई थी। तब कांग्रेस ने यह बदलाव इस नजरिए से किए थे कि उसके नैसर्गिक वोटर- यानी अगड़ा और अल्पसंख्यक उसके काम नहीं आ रहे हैं। इस बदलाव के साथ ही राहुल गांधी ने कन्हैया कुमार को भी बिहार में लगाया। कृष्णा अल्लावरु, राजेश राम और कन्हैया कुमार की तिकड़ी सक्रिय हुई, हालांकि बाद में कथित तौर पर राजद की आपत्ति पर कन्हैया कुमार किनारे कर दिए गए। राहुल गांधी खुद राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव के छोटे बेटे तेजस्वी यादव के साथ बाइक से बिहार की सड़कों पर घूमते दिखे। अपनी बहन प्रियंका गांधी को भी लेकर आए। लेकिन, इतना कुछ होने के बावजूद परिणाम बेहद बुरा रहा। इसके बाद ही कांग्रेस ने कड़ी समीक्षा के संकेत दिए थे, हालांकि फलाफल नौ महीने बाद भी सार्वजनिक नहीं हुआ है।

संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने बिहार के प्रभारी कृष्णा अल्लावरु और अध्यक्ष राजेश राम से भी बातचीत की

पिछले दिनों उत्तराखंड कांग्रेस अध्यक्ष की पीठ थपथपाते देखे गए कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने बिहार के प्रभारी कृष्णा अल्लावरु और अध्यक्ष राजेश राम से भी बातचीत की थी। सूत्रों के अनुसार, इंदिरा भवन में बैठक में तो बिहार पर बात हुई ही, इसके बाद दोनों को किनारे कर राज्य विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की दुर्गति पर जली-कटी सुनाई गई। कांग्रेस आलाकमान के गुस्से से अवगत कराया गया। किन बातों की जांच हो रही है, इसका भी संकेत दिया गया। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राजेश राम ने ऐसी कोई बात नहीं होने की जानकारी दी और कहा कि कांग्रेस बिहार में नए तरीके से संगठन विस्तार कर रही है।

अब आगे की रणनीति पर काम करना होगा

प्रदेश कांग्रेस प्रभारी कृष्णा अल्लावरु भी बिहार में बीच-बीच में सक्रिय दिखे और प्रदेश अध्यक्ष राजेश राम तो बैठक कर कई तरह के दावे कर रहे हैं। बीच में चर्चा निकली कि कांग्रेस के छह में से चार विधायक टूटकर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में जा रहे हैं। लेकिन, 243 सदस्यों वाली बिहार विधानसभा में 2001 एनडीए विधायकों के रहते उसकी जरूरत नहीं दिखी और मामला ठंडे बस्ते में पड़ा रहा गया। जब चार की संख्या को लेकर सबकुछ सेट हो जाएगा, तभी ऐसा कुछ

होगा। तब तक कांग्रेस खैर मना सकती है। प्रदेश प्रभारी और प्रदेश अध्यक्ष न केवल इस आशंका को रोकने में जुटे रहे हैं, बल्कि इसका खंडन भी करते रहे हैं। लेकिन, दूसरी तरफ बिहार चुनाव में हार के नौ महीने बाद भी जांच और पूछताछ का दौर चलते रहने से दोनों परेशान भी होंगे। केसी वेणुगोपाल कांग्रेस के पांचवें पावर सेंटर कहे जाते हैं और संगठन महासचिव भी हैं। इसलिए कुछ हो, इससे इनकार नहीं किया जा सकता है। हालांकि, दूसरी तरफ एक बड़ी बात यह भी है कि कृष्णा अल्लावरु खुद राहुल गांधी के करीबी माने जाते हैं और मौजूदा प्रकरण में राजेश राम भी उनकी पसंद के हैं। इसलिए, कुछ होने का इंतजार भी खिंचे तो आश्चर्य नहीं।

प्रदेश प्रभारी और अध्यक्ष पर आरोप

बिहार विधानसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस पर जो भी आरोप लगे, कांग्रेसियों ने ही लगाए। पहला आरोप था कि प्रदेश प्रभारी के रूप में दक्षिण के जिस नेता को लाया गया, वह बिहार की राजनीति को इतनी जल्दी नहीं समझ सकते हैं। दूसरा आरोप यह था कि प्रदेश कांग्रेस की कमान किसी मजबूत नेता को नहीं दी गई। एक की समझ और दूसरे की मजबूती की परीक्षा का पहला समय तब आया, जब सीटों का बंटवारा होना था। राजद ने लोकसभा चुनाव में तत्कालीन कांग्रेस के प्रदेश नेतृत्व को जैसे छकाया, ठीक उसी तरह विधानसभा चुनाव के समय भी हुआ। सभी 243 सीटों के लिए प्रत्याशियों से ऑनलाइन आवेदन मंगा चुकी कांग्रेस को 100 सीटों पर कम-से-कम प्रत्याशी उतारना था। इसका दम भी भरा जा रहा था, लेकिन राजद ने छोड़ी ही 61 सीटें। वह भी अपनी मजबूती जांचने के बाद। जिस तरह पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अखिलेश प्रसाद सिंह पर लोकसभा चुनाव में लालू प्रसाद यादव के सामने घुटने टेकने का आरोप लगा था, उसी तरह कृष्णा अल्लावरु और राजेश राम पर तेजस्वी यादव के सामने घुटने टेकने का आरोप लगा। लेकिन, बात यहीं नहीं रुकी। जैसे-जैसे 61 प्रत्याशियों की सूची जारी हुई,

कांग्रेस के अंदर गतिरोध जमीन पर आ उतरा। अब तक करीबियों को टिकट देने का आरोप लगता था, इस बार कांग्रेस में भी टिकट बेचने का आरोप लगा। दिल्ली में कांग्रेस में शामिल होने के बावजूद निर्दलीय सांसद बने राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव भी इस प्रकरण में कई तरह से सामने आए। और, जब चुनाव परिणाम महज छह सीटों पर जीत के रूप में सामने आया तो राजद की तरह कांग्रेस में भी कलह सड़क पर आ गया। सड़क से होते हुए आलाकमान तक बात पहुंचाई गई। यह बात भी कि जो अपनी सीट नहीं बचा सके, उन्हें टिकट बांटने की जिम्मेदारी दी गई थी।

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

रोजगार पर दावे नहीं रोजगार पर काम करे सरकार

वर्तमान सरकार रोजगार पर दावे बहुत कर रही थी। पर जो आंकड़े आए हैं उससे तो बेरोजगारी बढ़ी है। रही सही कसर परीक्षाओं के रद होने ने पूरी कर दी है। देश में युवाओं के आक्रोश की लहर देश के शिक्षा मंत्री की कुर्सी ले गई। पर बड़ा सवाल है, अब आगे क्या? इंजन खराब हो तो ड्राइवर बदलने से कुछ नहीं होता। यह मंत्री पर गुस्सा नहीं था, बल्कि उस वादे पर चढ़ता चक्रवृद्धि ब्याज था, जिसे अर्थव्यवस्था ने चुकाना बंद कर दिया। वादा था कि पढ़ोगे और सब ठीक-ठीक करोगे तो आखिर में एक नौकरी इंतजार करेगी। नेताओं और नौकरशाहों को यह आंकड़ा रोज देखना चाहिए। 2004 से 2023 तक भारत हर साल करीब 50 लाख ग्रेजुएट वर्कफोर्स में जोड़ता रहा, लेकिन नौकरी लगभग 28 लाख को ही दे पाया। अकुशलों को छोड़िए, डिग्रीधारी भी बेकार हैं। आर्थिक सर्वेक्षण और नमक छिड़कता है, मुश्किल से 8.25 प्रतिशत स्नातकों के पास योग्यता से मेल खाती नौकरी है, जबकि आधे से ज्यादा ऐसे काम में हैं, जो कोई 10वीं-12वीं पास व्यक्ति भी कर सकता है।

आज के विश्वविद्यालय पुराने ऑपरेटिंग सिस्टम पर चलते डिग्री कारखाने बन चुके हैं। रटंत विद्या, परीक्षा का नाटक और शिक्षा के लिबास में डिग्रीवाद। वे ऐसा कागज बांट रहे हैं, जिसे आज के एआइ युग में स्टार्टअप और ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर अब काबिलियत का सबूत मानते ही नहीं। कौशल का पूरा तंत्र खुद से ही बॉक्सिंग कर रहा है। स्किल इंडिया, पीएमकेवीवाई और उनकी सगी-संबंधी योजनाएं 'सर्टिफिकेट-गिनाऊ मॉडल' भर हैं। युवा फाइल में लाइन आइटम बनकर गिने गए, प्रमाणपत्र बंटे, फंड क्लेम हुए, लेकिन प्लेसमेंट किसी ने नहीं देखा। इस नाकामी का सबसे बड़ा सबूत यह है कि करीब दस राज्य अब बेरोजगार स्नातकों को सीधे नकद यानी बेरोजगारी भत्ता दे रहे हैं। सरकार ने नौकरी पैदा करने का दावा छोड़ दिया है और युवाओं को सम्मान के साथ बेरोजगार बने रहने के लिए पैसे देने लगी है। तो अब आगे क्या? इस संकट को हल करने के लिए नारों की नहीं, ठोस उपायों की जरूरत है। विश्वविद्यालयों में आउटकम-आधारित फंडिंग। यूजीसी और एआईसीटीई को सिर्फ नामांकन और इमारतों के आधार पर फंडिंग देना बंद करना होगा। संस्थागत अनुदान का 30 प्रतिशत हिस्सा सीधे सत्यापित आजीविका-परिणामों, जैसे प्लेसमेंट, अप्रेंटिसशिप या पूर्व छात्रों के जीएसटी-पंजीकृत उद्यमों आदि से जोड़ा जाना चाहिए। डिग्री कारखानों की बैलेंस शीट पर चोट कीजिए, पाठ्यक्रम सुबह तक खुद सुधर जाएगा। 'उद्योग की साझेदारी' का मतलब सिर्फ टाटा या इंफोसिस नहीं हो सकता। कॉर्पोरेट इंडिया 80 लाख युवाओं को नहीं सोख सकता।

2004 से 2023 तक भारत हर साल करीब 50 लाख ग्रेजुएट वर्कफोर्स में जोड़ता रहा, लेकिन नौकरी लगभग 28 लाख को ही दे पाया। अकुशलों को छोड़िए, डिग्रीधारी भी बेकार हैं। आर्थिक सर्वेक्षण और नमक छिड़कता है, मुश्किल से 8.25 प्रतिशत स्नातकों के पास योग्यता से मेल खाती नौकरी है, जबकि आधे से ज्यादा ऐसे काम में हैं, जो कोई 10वीं-12वीं पास व्यक्ति भी कर सकता है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

चादर से बाहर निकले पांव ही भ्रष्टाचरण की जड़

रोहित कौशिक

पूरे समाज में भ्रष्टाचार पर एक अजीब-सा खोखला आदर्शवाद पसरा हुआ है। भ्रष्टाचार पर बात करते हुए इंसान को स्वयं का भ्रष्टाचार नहीं दिखता है, लेकिन वह दूसरों के भ्रष्टाचार पर उंगली उठाता रहता है। भ्रष्टाचार जैसे मुद्दे पर भाषणबाजी तो बहुत हो रही है, लेकिन हम भ्रष्टाचार खत्म करने के लिए किसी भी तरह का प्रयास नहीं कर रहे हैं, बल्कि एक कदम आगे बढ़कर भ्रष्टाचार बढ़ाने में अपना सहयोग कर रहे हैं। सवाल यह है कि हमारे अंदर भ्रष्टाचार करने का भाव कैसे पैदा होता है? भ्रष्टाचार करते हुए हमें डर क्यों नहीं लगता है? क्यों हमारी आत्मा भ्रष्टाचार का विरोध नहीं करती है? ऐसा नहीं है कि हमें पता नहीं होता है कि भ्रष्टाचार करना गलत है, फिर हम क्यों भ्रष्टाचार के इस चक्रव्यूह में फंस जाते हैं? दरसअल, भ्रष्टाचार का मूल कारण लालच होता है।

इंसान की प्रवृत्ति ही ऐसी है कि वह लालच को छोड़ नहीं पाता है। ऐसा नहीं है कि अभाव के कारण ही लालच की प्रवृत्ति पैदा होती है; जिन लोगों के पास सब कुछ होता है, वे भी लालची होते हैं। इसलिए लालच का अमीरी या गरीबी से कोई सीधा संबंध नहीं है। ऐसे इंसान भी होते हैं जो गरीब होने के बावजूद दूसरों के कल्याण की बात सोचते हैं, तो दूसरी तरफ ऐसे इंसान भी हैं जो अमीर होने के बावजूद इस हद तक लालची होते हैं कि उन्हें सिर्फ अपना स्वार्थ ही दिखाई देता है। निस्संदेह, समाज पहले की अपेक्षा ज्यादा प्रगतिशील हो गया है, लेकिन हमारे समाज में लालच की प्रवृत्ति भी बढ़ती जा रही है। इसका अर्थ यह है कि पढ़ाई-लिखाई और प्रगतिशीलता हमारे लालच को खत्म नहीं कर पाई है। इसलिए पहले से ज्यादा शिक्षित समाज में न केवल भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है, बल्कि भ्रष्टाचार के नए-नए तरीके भी खोजे जा रहे हैं। पुराने जमाने में लोग अनपढ़ या कम शिक्षित होते थे, लेकिन उस समय भ्रष्टाचार नहीं था। उस समय अनपढ़ या कम शिक्षित लोगों ने सीमित संसाधनों में बड़े-बड़े संयुक्त परिवारों की जिम्मेदारी उठाई थी। जितनी चादर हो, उतने पैर पसारो मुहावरा उन दिनों सच्चे अर्थों में चरितार्थ किया जाता था। यही कारण था कि समाज के अंदर लालच की भावना बहुत कम थी।

समाज में पाप और पुण्य का भाव भी था, इसलिए लोग गलत काम करने से डरते थे। आज धार्मिक कर्मकांडों और धार्मिक क्रियाकलापों में लोगों की संलिप्तता तो बढ़ी है, लेकिन इसके साथ भ्रष्टाचार भी बढ़ता जा रहा है। यह कटु सत्य है कि इस दौर में धर्म के नाम पर भी भ्रष्टाचार बढ़ा है। बड़े-बड़े मठाधीशों

की जांच की जाए तो कई तरह के भ्रष्टाचार प्रकाश में आएंगे। अगर हम सच्चे अर्थों में धार्मिक हैं, तो हमारे मन में गलत भाव आने ही नहीं चाहिए। धार्मिक होने के बावजूद यदि हमारे मन में लालच पैदा हो रहा है, तो फिर हम धार्मिक कहां हुए? भ्रष्टाचार भी कई तरह के होते हैं। कुछ भ्रष्टाचार हमें ऊपर से दिखाई दे जाते हैं, लेकिन कुछ भ्रष्टाचार ऊपर से दिखाई नहीं देते हैं। हम अक्सर आर्थिक भ्रष्टाचार पर ही अपना ध्यान केंद्रित करते हैं, लेकिन एक नैतिक भ्रष्टाचार भी होता है। स्वयं यह देखा है कि यदि आप मंदिर में मुरमुरे का प्रसाद लेकर पंडित जी के पास जाते हैं, तो आपके साथ सामान्य व्यवहार होता है; इसके विपरीत, यदि आप देसी घी के लड्डू प्रसाद के रूप में पंडित जी को सौंपते हैं, तो आपके साथ विशिष्ट व्यवहार किया जाता है। यह भेदभाव भी एक तरह का नैतिक कदाचार ही है। हालांकि, चाहे आर्थिक भ्रष्टाचार हो या नैतिक भ्रष्टाचार, यह सब नैतिकता की कमी की वजह से ही होता है। यानी सतही तौर पर तो सब कुछ साफ-सुथरा लगता है, लेकिन साफ-सुथरी सतह के नीचे कई तरह की गंदगी छिपी होती है। जब यह गंदगी बहुत ज्यादा बढ़ जाती है, तब इसका प्रभाव सतह पर दिखाई देने लगता है। यह आश्चर्यजनक ही है कि हम अपनी दैनिक जिंदगी में गंदगी को पसंद नहीं करते हैं और इससे दूर ही रहना चाहते हैं, लेकिन भ्रष्टाचार रूपी गंदगी को स्वयं ही खुशी के साथ अपने जीवन में स्थान दे देते हैं। भ्रष्टाचार पर यह खोखला आदर्शवाद इस बात को सिद्ध करता है कि हम धन के लालच में गंदगी को भी स्वीकार कर लेते हैं। हम भ्रष्टाचार के खिलाफ काफी उपदेश देते रहते हैं, लेकिन दूसरी तरफ समाज में भ्रष्टाचार लगातार बढ़ता रहता है यानी हमने भ्रष्टाचार के साथ रहने की आदत बना ली है।

ऐसी स्थिति में सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या यह समाज वास्तव में भ्रष्टाचार खत्म करना चाहता है या फिर भ्रष्टाचार के साथ ही जीना चाहता है? जब हमसे कोई इंसान सुविधा शुल्क के रूप में रिश्वत वसूलता है, तो हमें बुरा लगता है और अपने अधिकार याद आने लगते हैं। इसके विपरीत, जब हम किसी दूसरे इंसान से रिश्वत वसूलते हैं, तो हमें अपना कर्तव्य याद नहीं रहता। यानी दूसरों के भ्रष्टाचार पर तो हम भ्रष्टाचार करने वाले इंसान को पापी बताकर उपदेश देने लगते हैं।

हर मौसम में निर्बाध भरोसेमंद सड़कों की जरूरत

वीरेंद्र कुमार पैन्यूली

उत्तराखंड में वर्षों पहले जिस सड़क परियोजना की चर्चा 'ऑल वेदर रोड' के नाम से शुरू हुई थी, वह अब 'चारधाम मार्ग' के नाम से अधिक जानी जाती है। लेकिन सवाल नाम का नहीं, उसके उद्देश्य और परिणाम का है। यदि यह सचमुच ऑल वेदर रोड है, तो बार-बार, बीसियों स्थानों पर मौसम की मार से अवरुद्ध होना इसके दावे पर सवाल खड़ा करता है। मूल सवाल है- क्या सड़क केवल चौड़ी और नई बनी है, या वास्तव में हर मौसम में भरोसेमंद आवागमन के योग्य भी हुई है? चारधाम तक ही क्यों? जब सड़कों का निर्माण जनता से वसूले गए करों और रोड टैक्स जैसे साधनों से होता है, तो हर सड़क का हर मौसम में उपयोगी व भरोसेमंद होना जनता का अधिकार है; सड़कें किसी सरकार की भीख नहीं।

गांवों में ऑल वेदर मार्ग किसानों की आय बढ़ाने में भी अहम भूमिका निभा सकते हैं, क्योंकि इससे आलू, सेब जैसे उत्पाद समय पर बाजार पहुंचेंगे व खराब होने की आशंका घटेगी। गांवों की सड़कों को ऑल वेदर बनाने का लक्ष्य कई पंचवर्षीय योजनाओं की प्राथमिकताओं में पहले से रहा है। सैन्य सुरक्षा की दृष्टि से भी ऑल वेदर रोड की आवश्यकता है और उत्तराखंड में यह प्रमुख प्राथमिकताओं में हो। धार्मिक चारधाम यात्रा के नाम पर भले ही इसे चारधाम मार्ग कहा गया हो, पर चारधाम यात्रा वर्ष में करीब छह माह, कपाट खुले रहने की अवधि में ही होती है व इसके लिए फोर-लेन सड़कें अनिवार्य नहीं। किसी भी मौसम में सड़कों पर सुरक्षित और सुगम आवागमन केवल सड़क की गुणवत्ता पर नहीं, बल्कि नागरिकों और कर्मचारियों के आचरण व कार्य-संस्कृति पर भी निर्भर करता है। बिजली, पानी, सीवर या टेलीफोन लाइनों के लिए बार-बार नई सड़कों को खोदना, उन पर रेत-बजरी बिखेरना अथवा निर्माण सामग्री डम्प करना आम है। इससे वाहन फिसलने जैसी दुर्घटनाएं होती हैं।

यदि हम स्वयं सड़कों पर ऐसी सामग्री बिखेरें, जो बरसात में फिसलन या आंधी में धूल-गुबार का कारण बने, तो ऑल वेदर रोड का लाभ कितना मिल पाएगा? ओस या बर्फ जमने पर सड़क सुरक्षित रहने के बावजूद पैदल चलना भी कठिन हो जाता है। पहाड़ों में हर साल आपदाओं से टूटने वाले पुल-पुलिये समय पर ठीक नहीं हो पाते। जर्जर ट्रॉलियों और पेड़ों के तनों के सहारे नदी-नाले पार करना आज भी जोखिम भरा है; बच्चों सहित ग्रामीणों के घायल होने की घटनाएं सामने आती रही हैं। हजारों करोड़ रुपये की चारधाम ऑल वेदर रोड का लाभ भी तभी मिलेगा, जब मरीज, किसान और आम नागरिक अपनी सड़क, पगडंडी और पुल के जरिए उसके मुहाने तक पहुंच सकें। टिहरी बांध के जलाशय बनने के बाद प्रतापनगर, केदार त्रासदी से प्रभावित क्षेत्रों, यमकेश्वर-ढांगू, गुप्तकाशी और कुमाऊं के अनेक गांवों में यह समस्या आज भी बनी हुई है। बरसात में बच्चों का स्कूल पहुंचना और मरीजों अथवा प्रसव के निकट महिलाओं को मोटर मार्ग तक लाना तक कठिन हो जाता है। कई सम्पर्क मार्ग ठीक होने के बावजूद वाहन-विहीन रहते हैं। सवाल इसलिए केवल ऑल वेदर रोड का नहीं, बल्कि गांवों को स्कूल, अस्पताल और मुख्य मार्गों से हर मौसम में जोड़ने वाले भरोसेमंद सम्पर्क तंत्र का है।

सवाल है कि ऑल वेदर रोड से पहले गांवों में ऑल वेदर स्कूलों, अस्पतालों और मुख्य मार्गों तक पहुंच सरकारों की प्राथमिकता क्यों नहीं है? असल में जरूरत केवल ऑल वेदर रोड की नहीं, बल्कि हर मौसम में उपयोगी और सुरक्षित सम्पूर्ण सड़क-सम्पर्क तंत्र की है। सड़क पर पर्याप्त रोशनी पर भी खास ध्यान नहीं। राहगीर चाहता है कि उसकी सड़क, पगडंडी या पुल किसी भी मौसम में बाधित न हो। फ्लाईओवर और पुलों की सुरक्षा का रिकॉर्ड भी चिंता से परे नहीं; पुलों के गिरने, भ्रष्टाचार और अवैध खनन से उनके स्तंभों व सड़कों के क्षतिग्रस्त होने के मामले इस चिंता को और गंभीर बनाते हैं। ऑल वेदर रोड का सड़क की चौड़ाई से सीधा संबंध नहीं है। संकरी पगडंडी भी ऑल वेदर हो सकती है, यदि वह हर मौसम में सुरक्षित और आवागमन योग्य रहे। हां, चौड़ी सड़क पर मलबा गिरने की स्थिति में उसके किसी हिस्से से बचकर निकलना बनिस्बत आसान होता है। पहले, खासकर फौजी वाहनों में, छोटा-मोटा मलबा हटाने को बेलचा-कुदाल तक रखे जाते थे; अब स्थिति यह कि खड़े या चलते वाहनों पर सीधे मलबा गिरने से दुर्घटनाएं हो रही हैं। सड़क कटान के नीचे के पेड़ों की कटाई भी जोखिमों को बढ़ा रही है। सम्पर्क मार्गों की स्थिति भी महत्वपूर्ण है।

जैसे मुख्य नदी के लिए सहायक नदी महत्वपूर्ण है, वैसे ही सड़कों के लिए सम्पर्क मार्ग अहम हैं। सभी सड़कों के जलागम क्षेत्रों में भू-क्षरण व भूस्खलनों को रोकने के लिए जलागम प्रबंधन का काम होना चाहिए। सड़कों की ज्योमेट्री और तात्कालिक डम्पिंग ग्राउंड के महत्व को भी रेखांकित किया जाना जरूरी है। यह भी कार्य-संस्कृति से जुड़ा सवाल है। सड़कों के बड़े प्रोजेक्ट्स से सामुदायिक प्राकृतिक संसाधनों, जैसे जलस्रोत, चारा, लकड़ी और लघु वन उत्पादों के संग्रहण के पारम्परिक क्षेत्रों पर असर पड़ सकता है। बड़े पैमाने पर भूगर्भीय कमजोरियों के कारण जीवन और आजीविका की सुरक्षा भी प्रभावित हो सकती है। न भूलें कि पहाड़ों में, और पूरे विश्व में भी, बड़ी-बड़ी परियोजनाओं वालों ने, चाहे वे खनन की हों या विद्युत उत्पादन की, अपने मतलब के लिए, अपनी मशीनों की ढुलाई और कई-कई पहियों वाले भारी वाहनों की आवाजाही के लिए सड़कें बनाई हैं। बेशक अहसान स्थानीय लोगों पर ही जताया जाए।

पुडुचेरी

भारत का है एक खूबसूरत पर्यटन स्थल

भागती सड़कों और जिंदगी की दौड़भाग से दूर अगर आप शांति की तलाश चाहते हैं तो पुडुचेरी जा सकते हैं। पुडुचेरी भारत का एक खूबसूरत पर्यटन स्थल है, जहां फ्रेंच वास्तुकला, नीले समुद्र और धीमी जीवनशैली के बीच सुकून वक्त बिता सकते हैं। पुडुचेरी घूमना चाहते हैं तो सबसे बेस्ट समय अक्टूबर से मार्च के बीच का होता है, क्योंकि इस समय वहां सबसे बेहतरीन मौसम देखने को मिलता है। हालांकि अप्रैल से जून तक गर्मी ज्यादा रहती है। वहीं जुलाई से सितंबर के बीच बारिश रहती है लेकिन हरियाली शानदार हो जाती है। ठंडी हवा, समुद्र की नमी और फ्रेंच गलियों का असली जादू सर्दियों में ही दिखता है। आध्यात्मिक स्थल की सैर चाहते हैं तो अरबिंदो आश्रम और आरोविले में मैट्रिमांडिर जाएं। पुडुचेरी का पैराडाइज बीच, प्रोमेनेड बीच और आरो बीच पर्यटकों के बीच काफी लोकप्रिय है। फ्रेंच विरासत की सैर के लिए वार मेमोरियल और व्हाइट टाउन जरूर जाएं। यहां का मुख्य आकर्षण पुडुचेरी लाइट हाउस, बॉटनिकल गार्डन और भारती पार्क है।

लाइट हाउस

पुडुचेरी में दो प्रसिद्ध लाइट हाउस (प्रकाशस्तंभ) हैं, जो यहां के समृद्ध समुद्री इतिहास और फ्रांसीसी औपनिवेशिक वास्तुकला को दर्शाते हैं। पुराना लाइट हाउस सबसे प्रतिष्ठित ऐतिहासिक स्थलों में से एक है। इसका निर्माण फ्रांसीसी शासकों द्वारा 1836 में कोरोमंडल तट के पहले लाइट हाउस के रूप में कराया गया था। यह 1979 तक सक्रिय रहा। नया लाइट हाउस वर्तमान में पूरी तरह चालू और आधुनिक लाइट हाउस है। पुराने लाइट हाउस के निष्क्रिय होने के बाद, भारत सरकार द्वारा इसे 1979 में शुरू किया गया था। इसकी ऊंचाई 49 मीटर है। इसकी 130 से अधिक सीढ़ियां चढ़कर ऊपर जाने पर पूरे पुडुचेरी शहर और बंगाल की खाड़ी का शानदार एरियल व्यू दिखाई देता है।

पैराडाइज बीच

पुडुचेरी का पैराडाइज बीच अपनी बेहद मुलायम सुनहरी-सफेद रेत, साफ नीले पानी और शांत वातावरण के लिए प्रसिद्ध सबसे लोकप्रिय समुद्र तट है। यह मुख्य भूमि से चुन्नंबर बैकवाटर द्वारा अलग है, जिसके कारण यहां केवल नाव (फेरी) के ज़रिए ही पहुंचा जा सकता है। समुद्र तट तक जाने के लिए मैंग्रोव और बैकवाटर के बीच से 10-15 मिनट की खूबसूरत नाव की सवारी करनी होती है। यहां जेट स्की, बनाना बोट राइड, एटीवी राइड और कुछ एडवेंचर स्पोर्ट्स उपलब्ध हैं। यह बीच सूर्योदय देखने और ठंडी समुद्री हवाओं के बीच टहलने के लिए एकदम सही है। यहाँ बैठने के लिए छप्पर वाली झोपड़ियां भी बनी हुई हैं।

वार मेमोरियल

पुडुचेरी वार मेमोरियल (फ्रांसीसी युद्ध स्मारक) पुडुचेरी के व्हाइट टाउन में गौबर्ट एवेन्यू (प्रॉमीनेड बीच रोड) पर महात्मा गांधी की प्रतिमा के ठीक सामने स्थित एक ऐतिहासिक स्मारक है। यह स्मारक मुख्य रूप से प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) के दौरान फ्रांस के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले फ्रांसीसी-भारत के वीर सैनिकों की स्मृति में बनाया गया था। इस स्मारक पर लगी कांस्य पट्टिकाओं पर प्रथम विश्व युद्ध के शहीदों के नाम अंकित हैं। बाद में इसमें द्वितीय विश्व युद्ध, अल्जीरियाई युद्ध और इंडोचाइना में फ्रांसीसी युद्ध के शहीदों के नाम भी जोड़े गए।

हंसना मना है

पचास वर्षीय-पति-'आज सवेरे शेव करने के पश्चात मैं महसूस कर रहा था कि मेरी उम्र के दस साल कम हो गए।' पत्नी-'क्या कहते हो! अगर इस स्पीड से प्रतिदिन आयु कम होती चली गई, तो एक हफ्ते में आप गायब ही हो जाओगे।'

लड़का लाइब्रेरी से 'बच्चों का पालन-पोषण की पुस्तक लेकर आया।' उसकी मां ने आश्चर्य से पूछा-'क्यों मुन्ने, इस पुस्तक का क्या करोगे? मुन्ने ने जबाब दिया-'मैं इसे पढ़कर ये जानना चाहता हूं कि मेरा पालन-पोषण उचित ढंग से किया जा रहा है की नहीं।'

पत्नी-'मैं तुमसे जो भी कहती हूं आप एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हो।' पति-'किन्तु मैं भी जो कहता हूं आप उसे दोनों कानों से सुनकर मुंह से निकाल देती हो।'

सुरेश-'अरे प्रकाश! हाथ में चोट कैसे लगी।' प्रकाश-'मैंने गाय के दांत गिनने के लिए उसके मुंह में हाथ डाला। उसने मेरी उंगली गिनने के लिए मुंह बन्द कर लिया।'

एक इंसान (दूसरे से)-'आ जाओ, कुत्ते से डरो नहीं।' पहला व्यक्ति-'क्यों, आपका कुत्ता काटता नहीं?' दूसरा व्यक्ति-'यही देखने के लिए तो आपको बुलाया है।'

कहानी | मूर्ख साधू और ठग

एक बार की बात है किसी गांव में एक साधु बाबा रहा करते थे। पूरे गांव में वह अकेले साधु थे, जिन्हें पूरे गांव से कुछ न कुछ दान में मिलता रहता था। दान के लालच में उन्होंने गांव में किसी दूसरे साधू को नहीं रहने दिया और अगर कोई आ जाता था, तो उन्हें किसी भी प्रकार से गांव से भगा देते थे। इस प्रकार उनके पास बहुत सारा धन इकट्ठा हो गया था। वहीं, एक ठग की नजर कई दिनों से साधु बाबा के धन पर थी। वह किसी भी प्रकार से उस धन को हड़पना चाहता था। उसने योजना बनाई और एक विद्यार्थी का रूप बनाकर साधु के पास पहुंच गया। उसने साधु से अपना शिष्य बनाने का आग्रह किया। पहले तो साधु ने मना किया, लेकिन फिर थोड़ी देर बाद मान गए और ठग को अपना शिष्य बना लिया। ठग साधु के साथ ही मंदिर में रहने लगा और साधु की सेवा के साथ-साथ मंदिर की देखभाल भी करने लगा। ठग की सेवा ने साधु को खुश कर दिया, लेकिन फिर भी वह ठग पर पूरी तरह विश्वास नहीं कर पाया। एक दिन साधु को किसी दूसरे गांव से निमंत्रण आया और वह शिष्य के साथ जाने के लिए तैयार हो गया। साधु ने अपने धन को भी अपनी पोटली में बांध लिया। रास्ते में उन्हें एक नदी मिली। साधु ने सोचा कि क्यों न गांव में प्रवेश करने के पहले नदी में स्नान कर लिया जाए। साधु ने अपने धन को एक कंबल में छुपाकर रख दिया और ठग से उसकी देखभाल करने का बोलकर नदी की ओर चले गए। ठग की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसे जिस मौके की तलाश थी, वो मिल गया। जैसे ही साधु ने नदी में डुबकी लगाई ठग सारा सामान लेकर भाग खड़ा हुआ। जैसे ही साधु वापस आया, उसे न तो शिष्य मिला और न ही अपना सामान। साधु ने ये सब देखकर अपना सिर पकड़ लिया।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

कार्यक्षेत्र में मेहनत अधिक करनी होगी। पुराने संपर्कों के माध्यम से व्यापार में कोई अटका काम बन सकता है। छोटी बातों को तूल देने से बचें, अन्यथा बहस हो सकती है।

वृषभ

आपकी कार्यशैली से वरिष्ठ अधिकारी प्रभावित होंगे। पुराने ग्राहकों से व्यापार में मुनाफा होगा। पारिवारिक सहयोग मिलेगा और लव लाइफ में मधुरता बनी रहेगी।

मिथुन

व्यावसायिक बैठकों में स्पष्ट रुख अपनाएं। पुरानी गलतफहमियों को दूर करने का आज सही मौका है। मार्केटिंग व कम्यूनिकेशन से जुड़े काम में लाभ होगा।

कर्क

काम में मन लगाने के लिए थोड़ा संघर्ष करना पड़ सकता है। कारोबार में नए निवेश से फिलहाल बचें। पार्टनर की बातों का गलत अर्थ निकालने से बचें।

सिंह
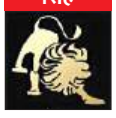
नौकरी में आपकी लीडरशिप क्षमता रंग लाएगी। कारोबारी हैं तो किसी बड़े प्रोजेक्ट या सौदे की कमान मिल सकती है। पैसों की स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
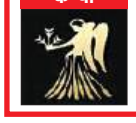
व्यापारिक सौदों में कागजी कार्रवाई पर ध्यान दें। पार्टनर से कोई बात छिपानी भारी पड़ सकती है, पारदर्शिता रखें। पीठ या कमर में थकान हो सकती है।

तुला

सहकर्मियों के साथ मिलकर किया गया काम समय पर पूरा होगा। साझेदारी के काम में फायदा होगा। पार्टनर के साथ छोटी यात्रा का योग बन सकता है।

वृश्चिक

नौकरी में कार्य पर एकाग्रता बनी रहेगी। व्यावसायिक निर्णयों में भावना से ज्यादा दिमाग का इस्तेमाल करें। रिश्ते में भरोसा बढ़ेगा। एक-दूसरे का सम्मान करें।

धनु
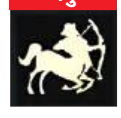
कार्यस्थल पर आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। विदेशी संपर्कों या ऑनलाइन माध्यम से व्यापार बढ़ाने के अवसर मिलेंगे। पारिवारिक संबंध में नया उत्साह देखने को मिलेगा।

मकर

नौकरी में कार्यभार अधिक रहेगा। कारोबारी हैं तो लंबित अनुबंधों में प्रगति होगी और पुराने संपर्कों से लाभ मिलेगा। व्यस्तता के बावजूद अपनों के लिए समय जरूर निकालें।

कुम्भ

आपकी आउट-ऑफ-द-बॉक्स सोच कार्यक्षेत्र में सराही जाएगी। कारोबार में आईटी और तकनीकी क्षेत्र के लोगों को सफलता मिलेगी। आंखों और सिर को थोड़ा आराम दें।

मीन

कलात्मक व रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। व्यापार में सकारात्मक बदलाव शुरू होंगे। भावनात्मक जुड़ाव गहरा होगा। शाम का समय सुखद बीतेगा।

बॉलीवुड | मन की बात

मैं कभी लोगों से बहुत ज्यादा खुलकर बात नहीं कर पाया : सुनील शेट्टी

हर इंसान का अलग-अलग व्यक्तित्व होता है। कुछ लोग बहुत ज्यादा बात करना पसंद करते हैं तो कुछ इंट्रोवर्ट होते हैं जिन्हें ज्यादा लोगों से बात करना पसंद नहीं होता। अभिनेता सुनील शेट्टी का कहना है कि वह भी इंट्रोवर्ट स्वभाव के हैं। हालांकि, वह इसे अपनी कमी मानते हैं। अभिनय की दुनिया में इंट्रोवर्ट होना काफी मुश्किल बात मानी जाती हैं, क्योंकि यहां कलाकार को कई कलाकारों के साथ काम करना पड़ता है। सुनील कहते हैं,मैं कभी लोगों से बहुत ज्यादा खुलकर बात नहीं कर पाया। जब भी मुझे कहीं एंकरिंग के लिए कहा जाता था तो मैं नर्वस हो जाता था। यह सच है कि फिल्मों में काम करते हुए इंट्रोवर्ट होने से काम मुश्किल हो जाता है। इसलिए अगर कोई मुझसे कहता कि तुम्हें नाटक करना चाहिए तो मुझे हमेशा लगता था कि मैं अपनी पंक्तियां भूल जाऊंगा। यह अजीब है, लेकिन मैं ऐसा ही हूं। यही मेरा स्वभाव है, यह एक ऐसी कमी है जिससे मैं बाहर नहीं निकल पाया। आगे अपने अभिनय सफर पर बात करते हुए सुनील कहते हैं कि मैं एक मार्शल आर्टिस्ट था, मुझे उसी कारण मौका मिला। उस समय हमारा सिनेमा बदलाव के दौर से गुजर रहा था। सीडी, डीवीडी आ रही थीं और सिनेमाघरों को चलाने के लिए फिल्मकारों को मास सिनेमा और एक्शन हीरो की जरूरत थी। उन्होंने आगे कहा कि मुझे लगता है कि इसलिए मुझे मौका मिला वर्ना मुझे एक्टिंग के बारे में ज्यादा नहीं पता था। स्कूल में भी मैंने जो एकमात्र नाटक किया था, उसमें बस एक पेड़ बनकर खड़ा था। सुनील शेट्टी के काम की बात करें तो एक्टर बीते दिनों अक्षय कुमार के साथ वेलकम टू द जंगल में नजर आए थे। मूवी में उन्होंने येडा अन्ना का किरदार निभाया है। इसके अलावा उनकी हेरा-फेरी 3 में भी आने की चर्चा है लेकिन अभी इसकी पुष्टि नहीं हुई है।

तीन सितंबर को नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी तापसी पन्नू की फिल्म 'गांधारी'

तापसी पन्नू की अदाकारी वाली फिल्म गांधारी की रिलीज डेट सामने आ गई है। इश्वक सिंह, छाया कदम, स्वस्तिका मुखर्जी, मीता वशिष्ठ और जतिन सरना मुख्य भूमिकाओं में हैं। इसके निर्देशक देवाशीष मखीजा हैं। जबकि इसकी लेखिका और निर्माता कनिका ढिल्लों हैं। अपकमिंग फिल्म गांधारी 3 सितंबर, को नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी। एक्शन-थ्रिलर फिल्म दिखाती है कि जब किसी महिला की प्यारी चीजें खतरे में हों, तो वह किस हद तक जा सकती है। इसमें यह भी दिखाया गया है कि मां के प्यार से ज्यादा ताकतवर कोई चीज नहीं होती। वह अपने बच्चे की सुरक्षा के लिए जो सफर तय करती है, उससे ज्यादा मुश्किल कोई सफर नहीं होता।

एक काल्पनिक शहर जॉयपुरा की पृष्ठभूमि पर आधारित, गांधारी अटूट विश्वास, शांत सहनशक्ति और अदम्य साहस की कहानी है। कहानी के केंद्र में बानी (तापसी पन्नू) है, एक ऐसी मां जिसकी ममता की परीक्षा हर मोड़ पर होती है। उसे पूरे यकीन और त्याग के साथ अकल्पनीय चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। तापसी पन्नू के अब तक के सबसे

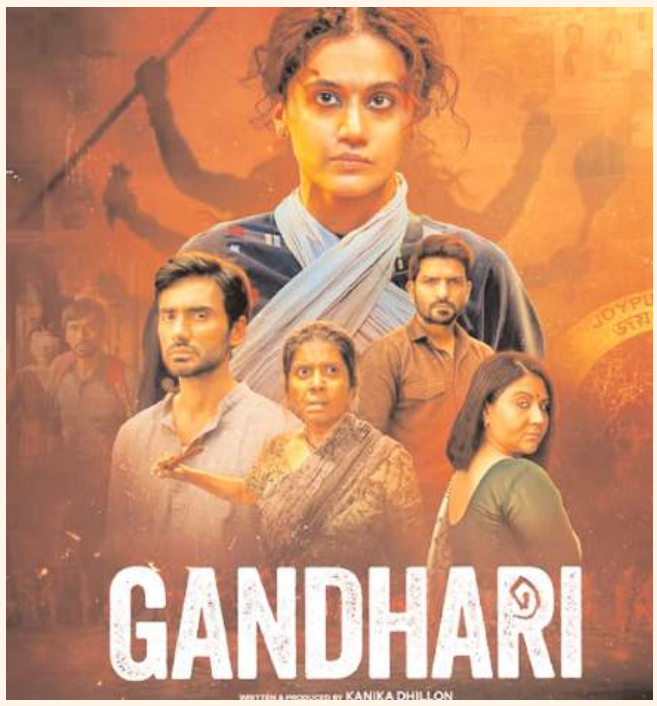

मुश्किल फिजिकल रोल्स में से एक मानी जाने वाली इस फिल्म में जबरदस्त एक्शन के साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं का भी गहरा मेल है। फिर आई हसीन दिलरुबा की सफलता के बाद, यह फिल्म नेटफ्लिक्स को कनिका ढिल्लों और तापसी पन्नू के साथ फिर से एक साथ लाती है। लेखिका और प्रोड्यूसर कनिका ढिल्लों ने कहा, गांधारी के जरिए हम एक ऐसी महिला की कहानी बताना चाहते थे, जो अपनी परिस्थितियों से अपनी पहचान तय नहीं होने देती।

बानी का सफर बहुत ही सच्चा, कभी न रुकने वाला और बेहद निजी है। इसी बात ने मुझे शुरू से ही उसकी ओर खींचा। तापसी के साथ फिर से काम करना बहुत खास रहा है। तापसी पन्नू को आखिरी बार फिल्म अस्सी में देखा गया था। इस फिल्म के निर्देशक अनुभव सिन्हा हैं। यह बॉक्स ऑफिस पर बहुत अच्छा नहीं कर पाई थी। 30 करोड़ की लागत में बनी यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर 13.43 करोड़ रुपये ही कमा सकी थी। आलोचकों से इसे सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली थी।

राम गोपाल वर्मा की फिल्म में पुलिस अधिकारी की भूमिका निभायेंगें हर्षबर्धन राणे

वास्तविक पात्रों को निभाना ज्यादा दिलचस्प होता है, यह मानना है अभिनेता हर्षवर्धन राणे का। फिल्मकारों की विशलिस्ट में राम गोपाल वर्मा (आरजीवी) के साथ काम करने का हर्षवर्धन का सपना अब पूरा होने जा रहा है। उनकी फिल्म पुलिस कंपनी में हर्षवर्धन पूर्व पुलिस अधिकारी दया नायक की भूमिका निभाएंगे। फिल्म का हिस्सा बनने को लेकर वह कहते हैं कि मुंबई की जमीन पर कदम रखने वाले हर अभिनेता ने कभी न कभी यह कल्पना की है कि उन्हें आरजीवी के निर्देशन में काम करने का मौका मिले। जब उन्होंने बताया कि

दया नायक लीड रोल है, तो फिर बड़ी जिम्मेदारी महसूस हुई।

इस पात्र को निभाने की खास बात यह है कि मैं यहां किसी इंसान को शून्य से नहीं गढ़ रहा था। मैं उनसे मिला हूं, उन्हें जाना है। वास्तविक पात्र निभाने की दिलचस्प बात यही है कि उस व्यक्ति को लेकर चल रही सुर्खियां आपको बताती हैं कि क्या हुआ होगा, लेकिन जब वह घटना हुई होगी, तब उस व्यक्ति के भीतर क्या चल रहा था, यह पता नहीं चलता है, इसलिए मैं उनसे मिला।

मेरी दिलचस्पी दया नायक की नकल करने में कम और उनके फैसलों के पीछे की मनोविज्ञान को समझने में ज्यादा है। आरजीवी सर की खास बात यही है कि वह हमेशा किसी भी काम के पीछे छिपे मानवीय प्रवृत्ति को तलाशते हैं। आगे दया नायक से हुई मुलाकात को लेकर वह कहते हैं कि मैं उनसे मिला हूं, क्योंकि रिसर्च से बेहतर उनसे मिलना है। उन्होंने जो घटनाएं बताई है, उसके तीन-तीन वर्जन मैंने लिखकर नोट्स बनाए हैं।

अखबारों के अनुसार क्या हुआ, दया सर के मुताबिक क्या हुआ और फिर मेरी अपनी व्याख्या कि दया नायक के दिमाग के अंदर वास्तव में क्या हुआ होगा, सब लिखा है। बतौर अभिनेता ऐसा तैयारी करना मेरे लिए दिलचस्प है। पहले लुक टेस्ट के दौरान भी आरजीवी सर के अंदर का जादूगर अपना काम कर रहा था।

अजब-गजब | बादलों के बीच बसा है दुनिया का सबसे दुखी शहर

दक्षिण अमेरिकी इस शहर में 30000 लोग जी रहे घुट-घुट कर जिंदगी, बिना सैलरी करते हैं काम

दक्षिण अमेरिकी देश पेरू में एंडीज पर्वतों की खतरनाक ऊंचाइयों पर बसा ला रिनकोनाडा शहर दुनिया का सबसे ऊंचा इंसानी ठिकाना माना जाता है। समुद्र तल से लगभग 5,100 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह शहर बादलों के बीच बसा हुआ है। भूमध्य रेखा के करीब होने के बावजूद ज्यादा ऊंचाई के कारण यहां का औसत वार्षिक तापमान केवल 1.2 डिग्री सेल्सियस रहता है। यहां की रातें हड्डियों को जमा देने वाली ठंड से भरी होती हैं। एक वक्त में केवल सोने की खदान का छोटा सा कैंप रहने वाली यह जगह आज 30,000 से अधिक आबादी का घर बन चुकी है, लेकिन इसे दुनिया का सबसे गरीब, दुखी और जहरीला शहर कहा जाए तो गलत नहीं होगा। इतना ही नहीं, इसे दुनिया का सबसे दुखी शहर भी माना जाता है, जहां लोग तमाम मुश्किल हालातों के बीच बिना सैलरी के काम करते हैं और घुट-घुटकर जीने को मजबूर हैं।

बता दें कि ला रिनकोनाडा को कागजों पर शहर जरूर कहा जाता है, लेकिन हकीकत में यहां जिंदगी किसी नर्क से कम नहीं है। इस शहर में न तो पक्की सड़कें हैं, न कोई सीवेज सिस्टम है और न ही पीने के पानी का कोई

पाइपलाइन नेटवर्क। लोग टीन की चादरों से बने बिना किसी इंसुलेशन वाले ढहते घरों में रहने को मजबूर हैं। यहां सोने को शुद्ध करने के लिए भारी मात्रा में पारे का उपयोग किया जाता है, जिसकी वजह से यहां की जमीन, हवा, पानी और बर्फ सब जहरीले हो चुके हैं। इस शहर पर न तो किसी सरकार का नियंत्रण है और न ही कोई कानून-व्यवस्था काम करती है। इस शहर की सबसे हैरान करने वाली बात यहां की खदानों में काम करने वाले मजदूरों का शोषण है। खदान कंपनियां अपने मजदूरों को महीने की कोई पक्की सैलरी या वेतन नहीं देती हैं। यहां काचोरियो नाम की एक पुरानी और क्रूर प्रथा चलती है।

काचोरियो नाम की इस व्यवस्था के तहत मजदूर 30 दिनों तक बिना किसी पैसे के खदान में काम करते हैं और 31वें दिन उन्हें अपने कंधों पर जितना मलबे और पत्थरों का बोरा उठाकर ले जाने की हिम्मत होती है, उतना ले जाने की अनुमति होती है। पत्थरों के उस बोरे में कितना सोना निकलेगा, यह पूरी तरह किस्मत पर निर्भर करता है। अक्सर मजदूरों को 31वें दिन ऐसी जगह भेज दिया जाता है, जहां पत्थरों में जरा सा भी सोना नहीं होता। इसके बावजूद, सोने की चमक और एक ही दिन में अमीर बनने की लालच में हजारों लोग अपने जीवन और सेहत को दांव पर लगाकर इस जहरीले शहर की ओर खींचे चले आते हैं। साल 2001 से 2009 के बीच ही इस शहर की आबादी दोगुनी से भी ज्यादा हो गई। ला रिनकोनाडा का हर पुरुष खदानों की जानलेवा गहराइयों में उतरता है, जबकि महिलाएं कचरे में सोना ढूंढने या सामान बेचने का काम करती हैं। यहां से निकलने वाला अधिकांश सोना सीधे ब्लैक मार्केट में चला जाता है।

ये है रूस की सबसे बड़ी कॉलोनी, यहां रहते हैं 5545 परिवार, छत से दिखती है दूसरी दुनिया!

सोशल मीडिया पर इन दिनों रूस के सबसे बड़े रेसिडेंशियल एरिया का एक वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। संत पीटर्सबर्ग में बसी इस विशाल कॉलोनी में पांच हजार पांच सौ से अधिक यानी 5545 परिवार रहते हैं। बेहद बड़े इलाके में फैले इस आवासीय परिसर के अपार्टमेंट्स की छत से नीचे की ओर देखने पर ऐसा प्रतीत होता है मानो कोई दूसरी दुनिया में पहुंच गया हो। वीडियो में ऊंचाई से लिया गया नजारा देखते ही बनता है। एक के बाद एक खड़े अपार्टमेंट ब्लॉक, उनके बीच की सड़कें, खुले स्थान और फैलाव इतना ज्यादा है कि सामान्य आवासीय कॉलोनियों से बिल्कुल अलग दिखता है। दर्शक कमेंट्स में लिख रहे हैं कि यह देखने में किसी छोटे शहर जैसा लगता है। इतने बड़े पैमाने पर आवासीय व्यवस्था देखकर लोग हैरान हैं कि एक ही परिसर में इतने परिवार कैसे रहते होंगे? संत पीटर्सबर्ग रूस के प्रमुख शहरों में से एक है और यहां बड़े-बड़े रेसिडेंशियल कॉम्प्लेक्स आम हैं। लेकिन यह कॉलोनी अपने आकार और निवासियों की संख्या के कारण विशेष रूप से चर्चा में है। 5545 परिवारों का मतलब है कि यहां हजारों लोग रोजमर्रा की जिंदगी बिताते हैं। स्कूल, दुकानें, पार्क और अन्य सुविधाएं भी इसी विशाल परिसर का हिस्सा होंगी तभी इतनी बड़ी आबादी संभालना संभव हो पाता है। छत से दिखने वाला नजारा वीडियो का सबसे आकर्षक हिस्सा है। ऊंचाई से देखने पर इमारतों की कतारें, उनके ज्यामितीय पैटर्न और फैलाव ऐसा भ्रम पैदा करते हैं जैसे कोई अलग दुनिया हो। कई लोग इसे साइंस फिक्शन फिल्मों के सेट जैसा बता रहे हैं। कुछ कह रहे हैं कि इतने बड़े आवासीय क्षेत्र में रहना अपने आप में अनोखा अनुभव होगा। बड़े रेसिडेंशियल प्रोजेक्ट्स शहरों में आवास की बढ़ती जरूरत को पूरा करने के लिए बनाए जाते हैं। जब आबादी बढ़ती है तो ऊंची और घनी इमारतों वाले कॉम्प्लेक्स विकसित किए जाते हैं। रूस जैसे देशों में सोवियत काल से ही बड़े पैमाने पर आवासीय निर्माण की परंपरा रही है। आधुनिक समय में भी विशाल कॉलोनियां विकसित की जाती हैं जहां हजारों परिवार एक साथ रह सकें। इस कॉलोनी की खासियत इसका आकार है। सामान्य कॉलोनियों में सैकड़ों परिवार रहते हैं लेकिन यहां संख्या 5545 बताई जा रही है जो इसे रूस के सबसे बड़े आवासीय क्षेत्रों में शुमार कराती है। छत से नीचे की ओर नजर दौड़ाएं तो इमारतों का सिलसिला दूर तक चला जाता है।

श्रमिक सुरक्षा को लेकर मचा सियासी बवाल

» सुप्रीम कोर्ट ने बदली उद्योग की परिभाषा, कांग्रेस ने उठाए सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। औद्योगिक संबंधों से जुड़े सुप्रीम कोर्ट के हालिया फैसले पर बवाल मच गया है। कांग्रेस ने इस मामले में चिंता जताई है। पार्टी का कहना है कि 'उद्योग' की परिभाषा को संकीर्ण करने से श्रमिकों को मिलने वाले कानूनी संरक्षण का दायरा प्रभावित हो सकता है। जयराम रमेश ने कहा कि 1978 में स्थापित व्यवस्था ने लंबे समय तक यह तय करने में मदद की कि किन गतिविधियों और कर्मचारियों पर श्रम कानून लागू होंगे। कांग्रेस ने शनिवार को सुप्रीम कोर्ट के उस फैसले पर चिंता जताई, जिसमें कहा गया है कि उद्योग शब्द की 1978 में दी गई श्रमिक हितैषी व्याख्या औद्योगिक संबंध संहिता, 2010 के तहत नए मामलों पर लागू नहीं होगी। पार्टी ने कहा कि कानून को उद्योग की व्यापक परिभाषा से सीमित करने या उससे अलग करने की कोई भी कोशिश श्रमिकों के संरक्षण को कमजोर कर सकती है। उन्होंने कहा कि उद्योग की व्याख्या का महत्व इस कानूनी स्थिति से जुड़ा है कि कौन कामगार माना जाएगा और इसके आधार पर किसे श्रम कानूनों का संरक्षण मिलेगा।

रमेश ने कहा, 1978 के बंगलूरू वाटर सप्लाई मामले में सुप्रीम कोर्ट ने तीन तत्व बताए थे, जो आम तौर पर किसी उद्योग की पहचान करते हैं। इनमें व्यवस्थित गतिविधि, नियोक्ता और कर्मचारी के बीच सहयोग तथा लोगों की जरूरतों और इच्छाओं को पूरा करने के लिए वस्तुओं या सेवाओं का उत्पादन या वितरण शामिल है। हालांकि, पूरी तरह आध्यात्मिक या धार्मिक सेवाओं को इससे बाहर रखा गया था।

रमेश ने कहा कि अदालत ने यह भी स्पष्ट किया था कि लाभ कमाना जरूरी नहीं है। धर्मार्थ संस्थाओं या सार्वजनिक निकायों की गतिविधियां भी उद्योग की परिभाषा में आ सकती हैं। रमेश के मुताबिक, इसका एकमात्र अपवाद संप्रभु कार्य थे, जैसे न्यायपालिका, कानून-व्यवस्था और रक्षा से जुड़े काम। उन्होंने कहा, करीब पांच दशकों तक इस ट्रिपल टेस्ट ने यह तय करने के लिए व्यापक और स्थापित व्यवस्था दी कि क्या उद्योगके दायरे में आता है। इससे पुराने औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 के तहत बड़ी संख्या में श्रमिकों को श्रम कानूनों का संरक्षण मिला। रमेश ने तर्क दिया कि इससे व्यवहार में उद्योग की संकीर्ण परिभाषा को जगह मिल सकती है। खासकर तब, जब औद्योगिक संबंध संहिता पहले ही केंद्र सरकार को अपने दायरे से प्रतिष्ठानों की कुछ और श्रेणियों को बाहर रखने का अधिकार देती है। कांग्रेस नेता ने कहा, न्यायमूर्ति बी वी नागरत्ना का असहमति वाला फैसला हमेशा की तरह साहसिक, स्पष्ट और प्रभावी है। उन्होंने कहा है कि बंगलूरू वाटर सप्लाई मामले में तय ट्रिपल टेस्ट पर दोबारा विचार करने की जरूरत नहीं थी और न्यायिक निश्चितता के हित में स्थापित कानून को बदलने से बचने की चेतावनी दी है। रमेश ने कहा कि न्यायमूर्ति नागरत्ना ने यह भी सही कहा है कि पुराने कानून के तहत स्थापित न्यायिक व्यवस्था नए कोड की व्याख्या में मदद कर सकती है। इसके बजाय नए कोड का इस्तेमाल पुराने कानून के तहत स्थापित व्यवस्था को फिर से खोलने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि अगस्त 2026 का बहुमत वाला फैसला चिंता का विषय है, क्योंकि ऐसे समय में श्रम संबंधों में अनिश्चितता बढ़ रही है जब औद्योगिक शांति के लिए स्पष्टता जरूरी है।

जयराम रमेश बोले- कमजोर होने का खतरा

मोदी सरकार ने औद्योगिक संहिता को कमजोर किया

कांग्रेस महासचिव और संचार प्रभारी जयराम रमेश ने दावा किया कि मोदी सरकार की औद्योगिक संबंध संहिता, 2020 ने हमारे श्रमिकों के लिए जरूरी सुरक्षा उपायों को काफी कमजोर कर दिया है। जयराम रमेश ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि इसी पृष्ठभूमि में सुप्रीम कोर्ट की बहुमत वाली पीठ ने 20 अगस्त 26 को उत्तर प्रदेश राज्य बनाम जय बीर सिंह मामले में अपने 1978 के चर्चित फैसले में तय ट्रिपल टेस्ट को नए सिरे से तय करने की परिकल्पना की है। यह ट्रिपल टेस्ट फरवरी 1978 के बंगलूरू वाटर सप्लाई एंड सीवरेज बोर्ड बनाम ए राजप्पा मामले में तय किया गया था।

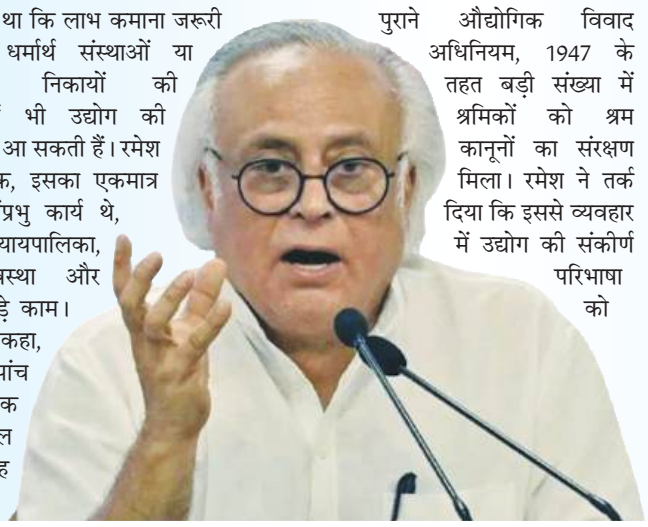

न्यायमूर्ति नागरत्ना का फैसला साहसिक

ये था सुप्रीम कोर्ट का फैसला

सुप्रीम कोर्ट ने महत्वपूर्ण फैसला सुनाते हुए कहा था कि उद्योग शब्द की उसकी 48 साल पुरानी व्यापक और श्रमिक हितैषी व्याख्या औद्योगिक संबंध संहिता, 2020 के तहत नए मामलों पर लागू नहीं होगी। फैसला सुनाते हुए प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत ने स्पष्ट किया कि 1978 के फैसले में न्यायमूर्ति वी आर कृष्णा अय्यर द्वारा विकसित ट्रिपल टेस्ट यह तय करने के लिए वैध रहेगा कि कोई गतिविधि उद्योग है या नहीं। उन्होंने कहा कि मौजूदा फैसले में ट्रिपल टेस्ट को परिष्कृत किया गया है, लेकिन इसका इस्तेमाल अब निरस्त हो चुके औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 के तहत लंबित या पहले ही तय हो चुके मामलों में नहीं किया जा सकता। बहुमत के फैसले में यह भी स्पष्ट किया गया कि अदालत ने औद्योगिक संबंध संहिता, 2020 पर विचार नहीं किया है।

रॉबिन्सन और टंग के आगे पाकिस्तानियों का सरेंडर

» तीन दिन में इंग्लैंड ने पारी और 103 रन से जीता पहला टेस्ट मैच

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

हेडिंग्ले। पाकिस्तान की बल्लेबाजी की पोल हेडिंग्ले में एक बार फिर खुल गई। इंग्लैंड के तेज गेंदबाजों के सामने पाकिस्तानी बल्लेबाजों ने ऐसा सरेंडर किया कि पहला टेस्ट तीन दिन में ही खत्म हो गया। इंग्लैंड ने पाकिस्तान को दूसरी पारी में सिर्फ 135 रन पर समेटकर पारी और 103 रन से करारी शिकस्त दी और तीन मैचों की टेस्ट सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली। ओली रॉबिन्सन, जोश टंग और जोफ्रा आर्चर की पेस तिकड़ी के सामने पाकिस्तान की बल्लेबाजी दोनों पारियों में पूरी तरह बेबस नजर आई।

पहली पारी में पाकिस्तान महज 171 रन पर ढेर हुआ था। इसके जवाब में इंग्लैंड ने 409 रन का मजबूत स्कोर खड़ा कर 238 रन की विशाल बढ़त हासिल की। तीसरे दिन इंग्लैंड की पारी 409 रन पर खत्म होने के बाद पाकिस्तान को कम से कम मैच को चौथे दिन तक ले जाने के लिए जुझारू बल्लेबाजी की जरूरत थी, लेकिन उसके बल्लेबाजों ने एक बार फिर निराश किया।(पाकिस्तान की दूसरी पारी की शुरुआत से ही बुरे सपने जैसी रही। जोफ्रा आर्चर ने नई गेंद से इमाम-उल-हक को पवेलियन भेजा। इसके बाद पाकिस्तान का मध्यक्रम ताश के पत्तों की तरह बिखर गया। टंग ने सऊद शकील को 14 रन पर आउट किया और इसके बाद शान मसूद तथा सलमान आगा को एक ही ओवर में चलता कर पाकिस्तान को 76 रन पर छह विकेट के संकट में डाल दिया। मोहम्मद रिजवान ने 39 गेंदों में 41 रन बनाकर कुछ देर तक संघर्ष किया। उन्होंने पाकिस्तान की ओर से दूसरी पारी में सबसे ज्यादा रन बनाए, लेकिन वह भी टीम को हार से नहीं बचा सके। और पूरी टीम 37.3 ओवर में 135 रन पर सिमट गई।

बांग्लादेश की पहली पारी 64 रन पर ढेर, स्टार्क को 6 विकेट

मैके। ऑस्ट्रेलिया ने दूसरे टेस्ट मैच के पहले दिन बांग्लादेश की पहली पारी महज 64 रन पर ढेर कर दी है। मैके में खेले जा रहे दूसरे टेस्ट मैच में ऑस्ट्रेलिया ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला लिया। तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क ने इसे सही साबित करने में ज्यादा देर नहीं लगाई और स्थिति यह रही कि पहले ही सत्र में बांग्लादेश ने छह विकेट गंवा दिए। बांग्लादेश के लिए सबसे ज्यादा रन 11वें नंबर के बल्लेबाज शोरिफुल इस्लाम ने बनाए जो 14 रन बनाकर आउट हुए। स्टार्क पहली ही गेंद पर शादमान इस्लाम को पवेलियन भेजा और फिर अपने अगले ओवर की पहली गेंद पर तंजिद हसन तमीम को खाता खोले बिना आउट किया। अगली ही गेंद पर नजमुल हुसैन शांतो स्टार्क का तीसरा शिकार बने। स्टार्क ने फिर कैमरन ग्रीन के हाथों मोमिनुल हक को कैच कराया। इसके बाद स्टार्क का पांचवां शिकार लिटन दास बने जो खाता खोले बिना आउट हुए। बांग्लादेश की बल्लेबाजी इस कदर खराब रही कि चार बल्लेबाज खाता भी नहीं खोल सके।

भ्रष्टाचार के खिलाफ 'जीरो टॉलरेंस' की नीति का उड़ा मखौल

» कलेक्टर के अभियान को लगा ब्रेक

» ओवरलोड वाहनों ने फिर पकड़ी रफ्तार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

उन्नाव। प्रदेश सरकार की भ्रष्टाचार और नियमों के उल्लंघन के खिलाफ 'जीरो टॉलरेंस' की नीति के बीच उन्नाव में ओवरलोड वाहनों की लगातार आवाजाही सवाल खड़े कर रही है। जिले के हाईवे से लेकर लिंक मार्गों तक क्षमता से अधिक भार लादे वाहन बेरोकटोक दौड़ते नजर आ रहे हैं। भारी वाहनों की इस आवाजाही से न केवल सड़कें समय से पहले क्षतिग्रस्त होने का खतरा है, बल्कि तेज रफ्तार में दौड़ते ओवरलोड वाहनों से गंभीर सड़क हादसों की आशंका भी बनी हुई है।

स्थानीय स्तर पर आरोप लगाए जा रहे हैं कि ओवरलोड वाहनों पर प्रभावी कार्रवाई के बजाय कथित रूप से 'इंट्री' का खेल चल रहा है। परिवहन विभाग के अधिकारियों पर करीब सात हजार रुपये प्रति वाहन प्रतिमाह लेकर ओवरलोड वाहनों को संचालन की कथित छूट देने के गंभीर आरोप लगाए जा रहे है। ओवरलोड वाहनों के कथित रूप से परिवहन विभाग में 'इंट्री' कराने के बाद खनन विभाग और प्रशासनिक स्तर पर भी लोकेशन की जानकारी लेने की बात कही जा रही है। आरोप है कि कार्रवाई की भनक लगते ही चालक वाहनों को तेज गति से निकालने का प्रयास करते हैं। भारी वजन से लदे इन वाहनों की तेज रफ्तार सड़क पर चलने वाले अन्य लोगों के लिए भी खतरा बन सकती है।

कार्रवाई पर उठ रहे सवाल

जिले में यदि बड़ी संख्या में ओवरलोड वाहन लगातार सड़कों पर दौड़ रहे हैं तो परिवहन, खनन और प्रशासनिक अमले की निगरानी व्यवस्था पर भी सवाल उठना स्वाभाविक है। क्या जिम्मेदार विभागों की नजर इन वाहनों पर नहीं पड़ रही या फिर कार्रवाई केवल कागजी औपचारिकताओं तक सीमित है? कथित 'इंट्री' के आरोपों की सच्चाई सामने लाने के लिए निष्पक्ष जांच की जरूरत महसूस की जा रही है। ओवरलोडिंग का मामला सड़क और यातायात सुरक्षा के साथ-साथ सरकारी राजस्व से भी जुड़ा है। यदि लगाए जा रहे आरोप जांच में सही पाए जाते हैं तो यह गंभीर प्रशासनिक लापरवाही के साथ भ्रष्टाचार का मामला भी बन सकता है। अब निगाहें जिला प्रशासन और शासन स्तर पर होने वाली संभावित जांच तथा कार्रवाई पर टिकी हैं।

विजय के फ्री कार ऐलान पर सियासी घमासान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

तमिलनाडु। तमिलनाडु की राजनीति इन दिनों सुर्खियों में बनी हुई है। इस बीच राज्य के मुख्यमंत्री जोसेफ विजय की तरफ से सूबे के सभी 234 विधायकों को फ्री कार देने के ऐलान से विपक्षी पार्टी डीएमके के साथ टकराव शुरू हो गया है। इसको लेकर राज्य की विधानसभा में हुई तीखी बहस में हुई। डीएमके ने राज्य की सरकार को बढ़ते कर्ज का हवाला देते हुए फ्री गाड़ियों के ऑफर को ठुकरा दिया है।

तमिलनाडु के बढ़ते कर्ज संकट के बीच मुख्यमंत्री विजय द्वारा सभी 234 विधायकों को फ्री कार और मासिक भत्ता देने की घोषणा के विरोध में, विपक्षी दल डीएमके ने इस तोहफे को पूरी तरह ठुकरा दिया है। विपक्ष के नेता उदयनिधि स्टालिन ने घोषणा की कि डीएमके के सभी 59 विधायक इस योजना का लाभ नहीं लेंगे।

माकपा नेताओं के खिलाफ हो रही साजिश : रागेश

» योगम के महासचिव नटेसन केरलम ने विस के पूर्व अध्यक्ष शमशीर की आलोचना की

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोच्चि। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) की कन्नूर जिला इकाई के सचिव के के रागेश ने पार्टी नेता और केरलम विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष ए एन शमशीर के खिलाफ टिप्पणी को लेकर एसएनडीपी योगम के महासचिव वेल्लापल्ली नटेसन की आलोचना की है। नारायण धर्म परिपालन (एसएनडीपी) योगम के महासचिव नटेसन ने अलप्पुझा में एक कार्यक्रम के दौरान शमशीर की आलोचना की थी। उन्होंने आरोप लगाया था कि शमशीर सच्चे कम्युनिस्ट नहीं हैं, बल्कि उनकी सोच इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग (आईयूएमएल) जैसी है।

नटेसन ने कहा था कि मुख्यमंत्री पिनराई विजयन जैसे वरिष्ठ नेताओं ने वर्षों के संघर्ष और त्याग के बाद अपना वर्तमान मुकाम हासिल किया है, जबकि शमशीर ने बिना किसी तरह के संघर्ष के नेतृत्व में जगह बना ली। रागेश ने 'फेसबुक' पर एक पोस्ट में कहा कि ऐसा लगता है कि नटेसन को विश्वास है कि पूरा समुदाय उनके कहे अनुसार सोचता और कार्य करता है। उन्होंने आरोप लगाया कि नटेसन की टिप्पणियां अक्सर सांप्रदायिक विभाजन पैदा करने वाली होती हैं।

नेटवर्क तक पहुंची जांच सहयोगियों पर कार्रवाई

» फिर कुछ लोग पकड़ से कैसे छूटे

» 940 करोड़ रुपये से अधिक की चल-अचल संपत्तियों पर कार्रवाई का दावा भी दस्तावेज में मौजूद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आधिकारिक दस्तावेजों में हरि शंकर टिबरेवाल का नाम स्काई एक्सचेंज से जुड़ी जांच के संदर्भ में सामने आया। मार्च 24 में ईडी ने कहा था कि उसकी जांच में टिबरेवाल को स्काई एक्सचेंज से जोड़ा गया और उसके करीबी सहयोगी सूरज चोखानी को गिरफ्तार किया गया। ईडी ने शेयर बाजार में कथित हेरफेर से जुड़े आरोपों की जांच का भी उल्लेख किया।

यह आरोप जांच का हिस्सा हैं और इन्हें अदालत का अंतिम फैसला नहीं माना जा सकता। लेकिन यहां सवाल बड़ा है और वह यह है कि जांच नेटवर्क तक पहुंची सहयोगियों की पहचान भी हुई गिरफ्तारियां भी की गयी संपत्तियों की जांच और कुर्की आदि कि कार्रवाई भी हुई विदेशी कंपनियों के जरिए निवेश के आरोपों की पड़ताल हुई दुबई तक तार पहुंचे। सब कुछ हुआ सिवाए हरि शंकर टिबरेवाल को छोड़कर और अभी तक नहीं पता चला कि उनकी वर्तमान कानूनी स्थिति क्या है? उपलब्ध दस्तावेजों में यह भी दर्ज है कि टिबरेवाल के भाई नितिन टिबरेवाल और सहयोगी सूरज चोखानी की गिरफ्तारी हुई। दिल्ली के कारोबारी विकास गर्ग को भी ईडी ने गिरफ्तार किया और दस्तावेजों में स्काई एक्सचेंज तथा टिबरेवाल से जुड़े धन के रास्ते का जिक्र है। विकास गर्ग से संबंधित करीब 940 करोड़ रुपये से अधिक की चल-अचल संपत्तियों पर कार्रवाई का दावा भी दस्तावेज में मौजूद है। यानी जांच के आसपास के कई नाम एजेंसियों की कार्रवाई में आए। लेकिन सबसे बड़ा नाम कहां है अभी तक कोई अता पता नहीं और न ही इस बात की चर्चा।

यही सवाल असली आग है

अगर किसी नेटवर्क की कंपनियों तक पहुंचा जा सकता है अगर सहयोगियों की पहचान की जा सकती है अगर संपत्तियों पर कार्रवाई हो सकती है तो फिर यह साफ होना चाहिए कि हरि शंकर टिबरेवाल के खिलाफ जांच आज किस मुकाम पर है। क्या उसे कभी पूछताछ के लिए बुलाया गया? क्या उसके खिलाफ समन जारी हुए? क्या कोई गिरफ्तारी वारंट है? क्या कोई अदालत में शिकायत या आरोप पत्र दाखिल हुआ? क्या ईडी को उसकी वर्तमान लोकेशन की जानकारी है? और सबसे महत्वपूर्ण अगर उसके विदेश में होने की जानकारी है तो उसे भारत वापस लाने के लिए क्या किया गया?

यह स्टोरी जांच की ट्रांसपेरेंसी की है

यह कहानी किसी को पहले से दोषी मानने की नहीं है यह कहानी जांच की पारदर्शिता की है। किसी व्यक्ति के खिलाफ पर्याप्त सबूत नहीं हैं तो यह भी साफ होना चाहिए। लेकिन अगर गंभीर जांच चल रही है और व्यक्ति का नाम आधिकारिक रिकॉर्ड में मौजूद है तो उसकी वर्तमान कानूनी स्थिति पर भी स्पष्टता होनी चाहिए क्योंकि सवाल बहुत सीधा है कि अगर जांच जाल के किनारों तक पहुंच गई तो जाल के कथित बड़े नाम तक कब पहुंचेगी?

ऑनलाइन सट्टेबाजी, डिजिटल प्लेटफॉर्म, हवाला के आरोप

इस पूरी कहानी के पीछे है महादेव ऑनलाइन बुक से जुड़ी जांच महादेव का नाम सामने आने के बाद जांच सिर्फ एक ऑनलाइन बेटिंग प्लेटफॉर्म तक सीमित नहीं रही। जांच एजेंसियों ने एक ऐसे नेटवर्क की पड़ताल शुरू की जिसमें ऑनलाइन सट्टेबाजी, डिजिटल प्लेटफॉर्म, हवाला के आरोप, विदेशी कंपनियां और भारत के बाहर से संचालित होने वाले आर्थिक रास्तों की बात सामने आई। इसी व्यापक जांच के संदर्भ में स्काई एक्सचेंज का नाम भी सामने आया। ईडी के दस्तावेजों में स्काई एक्सचेंज को बड़े कथित नेटवर्क के संदर्भ में देखा गया और हरि शंकर टिबरेवाल का नाम उससे जोड़कर सामने आया। दस्तावेजों के अनुसार टिबरेवाल से जुड़ी दुबई स्थित कंपनियों के माध्यम से भारतीय शेयर बाजार में निवेश किए जाने के आरोपों की जांच हुई।यहीं से कहानी सिर्फ ऑनलाइन सट्टेबाजी की नहीं रहती। यह सवाल बन जाता है कि अगर किसी कथित सट्टेबाजी नेटवर्क की कमाई को विदेशी कंपनियों बैंक खातों और अलग अलग निवेश के रास्तों से घुमाया गया तो उसका पैमाना कितना बड़ा था? ईडी की जांच में अपराध की कमाई को अलग अलग खातों के जरिए इधर उधर करने के आरोप सामने आए। विदेशी माध्यम कंपनियों के जरिए भारतीय कंपनियों में निवेश की बात भी दस्तावेजों में दर्ज है। हवाला और शेयर बाजार में हेरफेर से जुड़े आरोपों ने इस मामले को और गंभीर बना दिया।

चल रही है अलग-अलग जांच

महादेव ऑनलाइन बुक से जुड़े मामलों में अलग अलग व्यक्तियों और नेटवर्क के खिलाफ जांच चलती रही है। जांच एजेंसियों के दस्तावेजों में दर्ज आरोपों की अंतिम कानूनी सच्चाई अदालत की प्रक्रिया से तय होती है। फिर भी सवाल इसलिए बड़ा है कि जांच के दायरे में हजारों करोड़ रुपये के सट्टेबाजी नेटवर्क, विदेशी कंपनियों और भारत से बाहर तक फैले आर्थिक संपर्कों की बात आती है तो यह किसी छोटे मोटे स्थानीय मामले की जांच नहीं रह जाती। यहां पैसा है विदेशी कंपनियां है हवाला नेटवर्क है दुबई है और शेयर बाजार तक पहुंच के आरोप हैं। और सबसे महत्वपूर्ण भारत से बाहर तक फैले उन लोगों की तलाश का सवाल है जिनके नाम जांच की फाइलों में सामने आए।महादेव ऑनलाइन बुक की कहानी को इसलिए सिर्फ एक बेटिंग ऐप घोटाला कहकर समझना अधूरा होगा। जांच की फाइलों में इससे जुड़े कथित आर्थिक नेटवर्क, कई प्लेटफॉर्म, विदेशी कंपनियां और निवेश के रास्तों की परतें सामने आती हैं। स्काई एक्सचेंज और हरि शंकर टिबरेवाल का नाम इसी व्यापक जांच के संदर्भ में महत्वपूर्ण हो जाता है।

गुरुग्राम की चकाचौंध में दबी आम जनजीवन की जरूरतें

पॉश इलाके में पिछले 5 महीनों से पानी का संकट

» लोगों ने भाजा सरकार पर साधा निशाना

» सीएम सैनी से गुहार पानी दे दें सरकार

» देश का सबसे महंगा मकान बिकने की चर्चा में है आजकल गुरुग्राम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चडीगढ़। हरियाणा के गुरुग्राम पूर्व नाम गुड़गांव के चकाचौंध पूरी दुनिया को दिखाई देती है। जिसकी वजह से वहां परं देश का सबसे महंगा मकान बिकने की खबरें आजकल छाई हुईं हैं। गुरुग्राम जैसे 'मिलेनियम सिटी' का एक काला पक्ष भी है कि यहां के लोग पीने के पानी के लिए तरस रहे हैं।

सता में बैठी भाजपा की सैनी सरकार प्रचार तंत्र के माध्यम से अपने राज्य का बखान खासतौर से गुरुग्राम की हाईराइज बिल्डिंगों दिखाकर निवेश तो खूब बटोरती है वहां के आम लोगों की दयनीय स्तर देख कर सरकार की कार्यप्रणाली पर सवाल उठना लाजमी है। मुख्यमंत्री जिस गुरुग्राम की चमक दिखाकर हरियाणा के विकास का ढोल पीटा जाता है, उसी शहर के पॉश इलाके में सरकार अपने नागरिकों को दो दिन में एक बूंद पानी तक नहीं दिलवा पा रहे!

ऐसी खबर है कि गुरुग्राम के पॉश सेक्टर-27 में पिछले करीब 5 महीनों से लगभग हर हफ्ते पानी की गंभीर समस्या बनती रहती है। अब हालात ये हैं कि पिछले 48 घंटे से पानी नहीं आ रहा। लोगों के घरों की टंकियां खाली हैं और लोग निजी टैंकरों पर निर्भर हैं। तुर्रा वह लागों की मजबूरी का फायदा उठाकर 5000 तक प्रति टैंकर मांग रहे हैं।

सोशल मीडिया पर सैनी सरकार की ट्रोलिंग

अब तक लोग भी इन खबरों को लेकर सोशल मीडिया पर सैनी सरकार को ट्रोल कर रहे हैं। करोड़ों-अरबों के मकान, गगनचुंबी इमारतें, बड़ी-बड़ी कंपनियां और 'ग्लोबल सिटी' का तमगा किस काम का, अगर लोगों को नल में पानी तक न मिले? मुख्यमंत्री जी, अगर आपकी सरकार गुरुग्राम के सेक्टर-27 में पानी नहीं पहुंचा सकती, तो फिर हरियाणा के दूर-दराज गांवों और कस्बों का क्या हाल होगा?

बार-बार पानी बंद होने के लिए जिम्मेदार कौन

उधर पानी की किल्लत से सेक्टर -27 के लोग परेशान है। लोगों के कहना है कि यह सिर्फ पानी की किल्लत नहीं, प्रशासन की जवाबदेही का सवाल भी है। आम लोगों से सरकार व सीएम से सेक्टर-27 की सप्लाई तत्काल बहाल कराने की अपील की है। और साथ ही पूछा कि बार-बार पानी बंद होने के लिए जिम्मेदार कौन है?

हाइवे पर ट्रक के पीछे घुसी अनियंत्रित कार, पति-पत्नी समेत 3 की मौत, 9 घायल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। बैतूल-नागपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर मुलताई के पास शनिवार तड़के करीब 3.30 बजे भीषण सड़क हादसा हो गया। तेज रफ्तार कार सड़क किनारे खड़े ट्रक के पीछे जा घुसी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। हादसे में पति-पत्नी समेत तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि कार चालक सहित नौ लोग घायल हुए हैं।

पुलिस के अनुसार, कार में सवार सभी लोग महाराष्ट्र के नागपुर के पास बूटीबोरी कोल माइंस क्षेत्र के रहने वाले श्रद्धालु थे। वे गाड़ी नंबर- एमएच 49 सी 4756 में सवार होकर सीहोर स्थित कुबेरेश्वर धाम दर्शन के लिए जा रहे थे। प्रारंभिक जांच में आशंका है कि चालक को झपकी आने के कारण सड़क किनारे खड़ा ट्रक दिखाई नहीं दिया और कार सीधे उसके पीछे जा टकराई। हालांकि, हादसे की वास्तविक वजह जांच पूरी होने के बाद ही स्पष्ट हो सकेगी। हादसे में 42 वर्षीय दीपक और उनकी 40 वर्षीय पत्नी छाया की पहचान हो गई है।

सपा नेताओं से मारपीट मामले में सख्त कार्रवाई

» थाना प्रभारी समेत आठ पुलिसकर्मी लाइन हाजिर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मेरठ। उत्तर प्रदेश के मेरठ में समाजवादी पार्टी नेताओं के साथ कथित मारपीट के आरोपों की निष्पक्ष जांच के लिए शनिवार को सिविल लाइंस थाना प्रभारी सहित आठ पुलिसकर्मियों को तत्काल प्रभाव से पुलिस लाइन भेज दिया गया।

सहारनपुर रेंज के डीआईजी अभिषेक सिंह इस मामले की जांच कर रहे हैं, जबकि उपनिरीक्षक अरुण भाटी को सिविल लाइंस का नया थाना प्रभारी बनाया गया है। समाजवादी पार्टी (सपा) के दो नेताओं द्वारा तत्कालीन वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) अविनाश पांडेय समेत अन्य पुलिसकर्मियों पर मारपीट के लगाए गए आरोपों की जांच के बीच, मेरठ में सिविल लाइंस थाना प्रभारी समेत आठ पुलिसकर्मियों को शनिवार को तत्काल प्रभाव से लाइन हाजिर कर दिया गया।

पुलिस ने यह जानकारी दी। मेरठ जोन के अपर पुलिस महानिदेशक (एडीजी) भानु भास्कर के आदेश पर मामले की जांच सहारनपुर रेंज के पुलिस उपमहानिरीक्षक (डीआईजी) अभिषेक सिंह कर रहे हैं। पुलिस के अनुसार, संबंधित पुलिसकर्मियों को इसलिए लाइन हाजिर किया गया है ताकि जांच की निष्पक्षता और पारदर्शिता बनी रहे।

लाइन हाजिर किए गए पुलिसकर्मियों में सिविल लाइंस थाना प्रभारी निरीक्षक अखिलेश कुमार गौड़, उपनिरीक्षक मुलायम सिंह, हेड कांस्टेबल हरि ओम, कांस्टेबल मुकेश कुमार, हेड कांस्टेबल श्याम बाबू, कांस्टेबल सुमित कुमार, कांस्टेबल नीलम लौर और चालक ललित कुमार शामिल हैं। इससे पहले, सपा नेता दिग्विजय सिंह भाटी और मोहित जाटव ने आरोप लगाया था कि 19 अगस्त को तत्कालीन एसएसपी अविनाश पांडेय से मिलने के दौरान उनके साथ गाली-गलौज और मारपीट की गई। भाटी ने आरोप लगाया कि एसएसपी के कक्ष में पिटाई के बाद उन्हें सिविल लाइंस थाना प्रभारी अखिलेश कुमार गौड़ के जरिए विशेष अभियान समूह (एसओजी) के कार्यालय ले जाया गया, जहां उनके हाथ-पैर बांधकर उन्हें डंडों से पीटा गया। भाटी ने यह भी आरोप लगाया था कि पुलिसकर्मियों ने उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया और उन्हें यह धमकी दी कि घटना के बारे में मीडिया से बात करने पर उनका और बुरा हाल किया जाएगा। मोहित जाटव ने भी पुलिसकर्मियों पर उन्हें मुठभेड़ की धमकी देने का आरोप लगाया था। इन आरोपों की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं हुई है।

पटना में फिर सम्राट सरकार के खिलाफ हल्लाबोल

असिस्टेंट प्रोफेसर अभ्यर्थियों के लोकभवन मार्च के दौरान पुलिस से झड़प

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। पटना में तेजस्वी के मार्च एकबार फिर सम्राट सरकार के खिलाफ हल्ला बोल किया गया है। ऑल पीएचडी होल्डर एंड रिसर्च स्कॉलर एसोसिएशन ऑफ बिहार' के बैनर तले अभ्यर्थी पिछले 19 दिनों से चल रहे अनिश्चितकालीन आमरण अनशन पर हैं।

शनिवार को इन्होंने लोकभवन मार्च का एलान कर रखा था। इस दौरान पुलिस ने जगह-जगह अभ्यर्थियों को रोकने के लिए बैरिकेडिंग लगाई थी। पुलिस के इस प्रयास के बीच बेली रोड पर जबरदस्त झड़प हो गई। अभ्यर्थियों ने बैरिकेडिंग तोड़ दी। सैकड़ों अभ्यर्थी गर्दनीबाग से लोकभवन की ओर से

बढ़ रहे हैं। असिस्टेंट प्रोफेसर अभ्यर्थी सरकार के खिलाफ नारेबाजी कर रहे हैं।

आंदोलन का नेतृत्व कर रहे हैं डॉ. कुंदन कुमार ने कहा कि पिछले 19 दिनों से 'ऑल पीएचडी होल्डर एंड रिसर्च स्कॉलर एसोसिएशन ऑफ बिहार' के बैनर तले आमरण अनशन पर बैठे हैं। तीन में दो शोधर्थियों की हालत बिगड़ गई है। उन्हें अस्पताल में भर्ती करवाया गया है लेकिन सरकार को हमारी चिंता नहीं है।

अभ्यर्थियों ने कहा कि नई नियमावली में अधिकतम उम्र सीमा 55 वर्ष से घटाकर 40 वर्ष कर दी गई है। इससे वर्षों से अतिथि शिक्षक के रूप में कार्यरत अभ्यर्थियों के सामने अवसर खत्म होने का खतरा है। उन्होंने उम्र सीमा 55 वर्ष रखने की मांग की। इसके अलावा अभ्यर्थियों ने रिसर्च पब्लिकेशन के अंक हटाए जाने पर भी आपत्ति जताई।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा